दुर्गा

सत्र 2021–2022

बैजनाथ चौधरी राजकीय महिला महाविद्यालय, नांगल चौधरी

–: सरस्वती माँ :–

या कुंदेदुतुषार हार धवला, या शुभ्रवस्त्रावृता।
या वीणा वरदण्डमंडित करा, या श्वेत पद्मासना ॥
या ब्रह्माच्युत शंकर प्रभृतिभिर्देवै: सदावन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती नि:शेष जाड.यापहा ॥

बैजनाथ चौधरी चेरिटेबल ट्रस्ट कोलकाता के द्धारा महाविद्यालय प्रांगण में सरस्वती मां की प्रतिमा का अनावरण दिनांक – 16 नवम्बर, 2021 वार – मंगलवार को दिवंगत समाज सेवी स्वर्गीय श्री बैजनाथ चौधरी जी के सुपुत्र श्री गोविन्द राम चौधरी के कर कमलों द्धारा किया गया था। मां सरस्वती की प्रतिमा स्थापित करवाने में महाविद्यालय की कर्मठ प्राचार्या डॉ0 अनिता तंवर जी का असीम सहयोग रहा है। महाविद्यालय परिवार बैजनाथ चेरिटेबल ट्रस्ट कोलकाता का सदैव ऋणी रहेगा।

स्व. श्री बैजनाथ चौधरी

''वन्दन अभिनन्दन करे, धरा और आकाश।
दान वीरता आपकी, जग में है विख्यात''॥

स्वर्गीय भामाशाह बैजनाथ चौधरी जी का महाविद्यालय परिवार हृदय से आभार व्यक्त करता है कि उन्होंने छात्राओं के उज्जवल भविष्य को ध्यान में रखते हुए महिला महाविद्यालय स्थापित करवाया। क्योंकि नांगल चौधरी दक्षिण हरियाणा के अन्तिम क्षोर पर स्थित है। जहाँ आज भी महिला शिक्षा का अभाव है। इस महाविद्यालय के निर्माण से इस क्षेत्र की बेटियों को न केवल शिक्षा बल्कि समाज के हर क्षेत्र में उनकी पहचान बनने लगी है। उनकी महाविद्यालय निर्माण के प्रति सोच से यह पता लगता है कि वे नारी शिक्षा को लेकर कितने चिंतित थे। उन्हें यह पता था कि समाज में अगर बेटी शिक्षित होगी तो वह दो कुलों को शिक्षित व सुसज्जित करेगी।

हम सब उस दिव्य पुण्य आत्मा स्व. बैजनाथ जी की इस दानवीरता व महानता को कोटि-कोटि नमन करते हैं।

श्री गोविन्द राम चौधरी

मुझे बहुत ही प्रसन्नता हो रही है कि हमारे महाविद्यालय की पत्रिका 'दुर्गा' का संस्करण हो रहा है। बैजनाथ चौधरी राजकीय महिला महाविद्यालय हमारे स्वर्गीय पिताश्री का एक सपना था जिसे मैं आज फलीभूत होते देख रहा हूँ। इस महाविद्यालय के सफल संचालन में हमारे प्राचार्य, शिक्षक, स्टाफ तथा विद्यार्थियों का पूरा सहयोग रहा है। मैं नांगल चौधरी के निवासियों का भी धन्यवाद करना चाहूँगा कि उन्होंने समय-समय पर महाविद्यालय की व्यवस्था बनाने में भी सहयोग दिया। पत्रिका का नाम 'दुर्गा' रखा गया है जो कि हमारी पूज्यनीय माता जी का नाम है।

शिक्षा का क्या उद्देश्य होता है। सब लोगों के लिए अलग-अलग उद्देश्य होता है। मेरे हिसाब से शिक्षा के अनेक उद्देश्य हैं। सबसे पहले है - आत्मविश्वास। प्रारम्भिक शिक्षा हमारे अन्दर आत्मविश्वास पैदा करती है। यही आत्मविश्वास हमें आगे ले जाने के लिए प्रेरित करता है साथ ही साथ शिक्षा की सहायता से हम अपनी समस्या को हल कर पाते हैं। जब हमारे अन्दर आत्मविश्वास आता है, तब हम किसी भी परिस्थितियों में, किसी भी असुविधाजनक माहौल में अपने आपको सहज कर पाते है। तीसरा शिक्षा का उद्देश्य जीवनयापन के लिए धर्नाजन करना है, लेकिन मैं समझता हूँ कि ऐसा नहीं है। धनार्जन होता है लेकिन यह प्राइमरी उद्देश्य नहीं है। इसके अलावा शिक्षा का उद्देश्य समाज का निर्माण करना, अच्छे संस्कार देना, इसके साथ-साथ शिक्षा का उद्देश्य राष्ट्र का निर्माण करना है। यदि हम सब अपनी आने वाली पीढ़ी को अच्छे संस्कार दे पाते है तो हमारा समाज अच्छा बनेगा, अच्छा समाज बनेगा तो राष्ट्र का भी अच्छा निर्माण होगा।

बैजनाथ चौधरी चेरिटेबल ट्रस्ट हमेशा चाहेगा कि महाविद्यालय की प्रगति दिन दुगुनी रात चौगुनी होती रहे। महाविद्यालय को जब भी एवं जिस भी सहायता की आवश्यकता पड़ेगी वह सहायता हम अवश्य ही करेंगे। मैं चाहता हूँ कि महाविद्यालय राज्य का सबसे उच्चतम महाविद्यालय बने। जिसके लिए आप सभी का सहयोग बहुत ही आवश्यक है तथा हमारा ट्रस्ट भी इसमें पूरा सहयोग करेगा तथा नांगल चौधरी के निवासी भी इसमें पूरा सहयोग करेंगे। हम सब को मिलकर इस महाविद्यालय को एक ऊँचे मुकाम पर ले जाना है।

धन्यवाद।

श्री गोविन्द राम चौधरी
बैजनाथ चेरिटेबल ट्रस्ट के चेयरमैन

Message

It is a matter of immense pleasure and happiness for me to send my heartiest good wishes to the B.C. Govt. College for Women, Nangal Chaudhary for their attempt to publish "DURGA" the yearly magazine of the college. It serves as a learning path to the students who contribute to its making and it gives a good exposure regarding the process of learning in the institution.

9/4/22.

Dr. Abhe Singh Yadav
MLA Nangal Chaudhary

संदेश

प्रिय पाठकों/छात्राओं

मुझे अत्यन्त हर्ष एवं प्रसन्नता हो रही है कि हमारे महाविद्यालय की पत्रिका 'दुर्गा' का यह प्रथम संस्करण बहुत ही सुन्दर साज-सज्जा के साथ प्रकाशित हो रहा है।

पत्रिका महाविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों का दर्पण होती है। महाविद्यालय में शिक्षण कार्य के साथ-साथ छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए विभिन्न गतिविधियाँ वर्ष भर चलती रहती है। शिक्षा मानव समाज के सर्वांगीण विकास की आधार शिला है। शिक्षा ही व्यक्ति को विवेकशील व संस्कारवान बनाकर उसे निरंतर प्रगति के पथ पर ले जाती है। शिक्षा से ही सभ्य समाज का निर्माण होता है। वैश्वीकरण के इस युग में सभी प्राध्यापकों का भी यह दायित्व है कि वे त्याग व निष्ठा के साथ संस्कारित एवं मेधावी विद्यार्थियों की ऐसी पौध तैयार करें जो राष्ट्र की अमर व अनमोल धरोहर बन सके। शिक्षा संस्कार की एक प्रक्रिया है, परन्तु आधुनिक शिक्षा प्रणाली में संस्कारों की घोर उपेक्षा हो रही है। शिक्षा का उद्देश्य शिक्षार्थी का सर्वांगीण विकास करना है। पत्रिका छात्राओं की रचनात्मक प्रतिभा को प्रदर्शित करने का सबसे प्रभावशाली माध्यम है। यूँ तो छात्राओं में रचनात्मक प्रतिभा होती ही है, परन्तु आवश्यकता इस बात की है उनकी इस रचनात्मकता को सही दिशा में मोड़ दिया जाए। यद्यपि मौलिक अभिव्यक्ति में अपरिपक्वता हो सकती है, परन्तु यह अपरिपक्वता ही उनकी मौलिकता की परिचायक है।

मानव जीवन में संस्कारों की बड़ी महत्ता है। संस्कारवान व चरित्रवान मानव में सरसता, मधुरता व पावनता होती है। घर ही संस्कारों की जननी है। अत: अच्छे संस्कार केवल घर से ही आते है। चरित्रवान व्यक्ति अनेक विपत्तियों के आने पर भी अपने कर्तव्य पथ से विचलित नहीं होता है। आज हम देखते है कि समाज में सबसे ज्यादा गिरावट नैतिक मूल्यों में आई है। परन्तु आप सभी छात्राओं से मेरा आग्रह है कि आपको अपना जीवन चरित्रवान बनाना है। आपको अपने कर्मक्षेत्र की भूमि में निराश नहीं होना है। हर सफलता के पीछे संघर्ष होता है।

मुझे विश्वास है कि हमारी छात्राएं आगे चलकर प्रबद्ध, देशभक्त एवं विभिन्न कौशलों से परिपूर्ण सभ्य नागरिक बनेंगी एवं समाज व देश के विकास में अपना सक्रिय योगदान देकर अपने जीवन को सफल बनाएंगी। नोबेल पुरस्कार विजेता यूसूफजई ने भी कहा है कि- ''एक बच्चा, एक शिक्षक, एक किताब और एक पेन, दुनिया बदल सकते हैं।''

मैं इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मुख्य सम्पादक, स्टाफ सम्पादक, छात्रा सम्पादक तथा उन सभी स्टाफ सदस्यों एवं छात्राओं को बधाई देती हूँ जिन्होंन प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से अपना सहयोग दिया है। मेरी शुभकामनाएँ आपके साथ है।

प्राचार्या

डॉ० अनीता तंवर

सम्पादकीय

मुख्य सम्पादक की कलम से...

'दुर्गा पत्रिका' का यह प्रथम अंक प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यधिक हर्ष कि अनुभूति हो रही है। पत्रिका का नामकरण भामाशाह स्वर्गीय बैजनाथ चौधरी जी की धर्मपत्नी श्रीमती दुर्गा चौधरी के नाम पर रखा गया है।

शिक्षा जगत में महाविद्यालय पत्रिका महाविद्यालय की प्रगति, भावी योजनाओं को प्रस्तुत करने का माध्यम होने के साथ-साथ छात्राओं की लेखन शक्ति, विचारों एवं भावों और कल्पनाओं को अभिव्यक्त करने का सशक्त एवं प्रबल साधन है। दुर्गा पत्रिका के प्रकाशन के रूप में महाविद्यालय का एक अद्भुत प्रयास है। महाविद्यालय में संसाधनों की सीमितता के कारण आकृति में यद्यपि लघु है, किन्तु गुणवत्ता एवं सम्पादन की दृष्टि से यह पत्रिका बैजनाथ चौधरी राजकीय महिला महाविद्यालय, नांगल चौधरी की गरिमा को अभिसिंचित करने वाली है। छात्राओं ने अत्यन्त उत्साह से वृहत संख्या में रचनाएं देकर अपने लिखित अभिव्यक्ति तथा मौलिक चिंतन का परिचय दिया है।

'दुर्गा पत्रिका' के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सर्वप्रथम मैं विद्या की आराध्य देवी मां सरस्वती के चरणों में कोटि-कोटि श्रद्धाभाव समर्पित करती हूँ जिनकी असीम अनुकम्पा से हम सभी साहित्य साधना में संलग्न है। साहित्य समाज का दर्पण होता है जो कि तत्कालीन समाज का चित्र पाठक वर्ग के समक्ष रखता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में - ''प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब है।'' समाज की क्षमता और सजीवता यदि कहीं प्रत्यक्ष देखने को मिल सकती है तो निश्चित रूप से साहित्य रूपी दर्पण में ही मिलती है। आज भी कालिदास, सूरदास, प्रेमचन्द जैसे साहित्यकार उनके साहित्य के कारण जाने जाते है। क्योंकि उनका साहित्य हमें एक संस्कृति और एक जातीयता के सूत्र में बाँधता है, इसलिए साहित्य समाज को एक नई दिशा प्रदान करता है। अत: प्रत्येक विद्यार्थी को चाहिए कि वह अपने साहित्य के प्रति जागरूक रहे और ऐसा करके विद्यार्थी जीवन को सुनियोजित ढंग से निर्वाह करे। विद्यार्थी देश के भावी कर्णधार है जो देश को उन्नति के पथ पर अग्रसित करते है।

माननीय प्राचार्या डॉ० अनीता तंवर जी की आभारी हूँ जिनके कुशल निर्देशन में इस पत्रिका को प्रकाशित करवाने में समर्थ हुई हूँ।

अन्त में श्रीमती सन्तोष यादव, सम्पादिका विज्ञान विभाग, श्री रमन यादव, श्री प्रदीप यादव, सम्पादक अंग्रेजी विभाग, श्रीमती सुनीता यादव, सम्पादिका हिन्दी विभाग एवं समस्त स्टाफ के प्रति मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ जिनके प्रयास से पत्रिका का यह कार्य पूर्ण हुआ है।

डॉ० सुशीला यादव
मुख्य सम्पादिका 'दुर्गा पत्रिका'

–: महाविद्यालय परिचय :–

बैजनाथ चौधरी राजकीय महिला महाविद्यालय, नांगल चौधरी-कोटपूतली (जयपुर) मार्ग पर स्थित है। महाविद्यालय परिसर छायादार वृक्षों, सौम्य एवं शांत वातावरण को अपने में समाहित किए हुए है। इस महाविद्यालय में कला, विज्ञान, वाणिज्य संकाय है। इस सत्र में 1027 छात्राएं अध्ययनरत है। इस महाविद्यालय में दो एसोसिएट प्रोफेसर, आठ असिस्टेंट प्रोफेसर, तेरह एक्सटेंशन लेक्चरर, एक उप-अधीक्षक, एक कनिष्ठ लिपिक, एक प्रयोगशाला सहायक, आठ चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी है। महाविद्यालय में पाँच प्रयोगशाला, एक पुस्तकालय परिसर, एक कम्प्यूटर प्रयोगशाला, एक जिम कक्ष, खेल-कूद का मैदान, एक सुन्दर उद्यान आदि महाविद्यालय परिसर में है।

बैजनाथ चौधरी राजकीय महिला महाविद्यालय का निर्माण भामाशाह स्वर्गीय बैजनाथ चौधरी जी व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती दुर्गा देवी चौधरी एवं उनके सुपुत्रों श्री विश्वनाथ चौधरी, श्री दिलीप कुमार चौधरी, श्री गोविन्द राम चौधरी, श्री विमल कुमार चौधरी ने करवाया है। स्वर्गीय बैजनाथ चौधरी जी ने अपने पिता स्व. श्री कुंजीलाल व माता श्रीमती चंपा देवी चौधरी की पुण्य स्मृति में करवाया था। अत: महाविद्यालय परिवार की तरफ से बैजनाथ चेरिटेबल ट्रस्ट को कोटि-कोटि प्रणाम।

बैजनाथ चौधरी राजकीय महिला महाविद्यालय, नांगल चौधरी का शिलान्यास दिनांक 12 मई 2013 रविवार को भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा के कर कमलों द्वारा किया गया था। शिलान्यास समारोह में पूर्व शिक्षा मंत्री श्रीमती गीता भुक्कल, पूर्व स्वास्थ्य मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह यादव, पूर्व लोकसभा सांसद श्रीमती श्रुति चौधरी, पूर्व मुख्य संसदीय सचिव श्रीमती अनीता यादव, पूर्व मुख्य संसदीय सचिव राव दानसिंह आदि गरिमामयी हस्ती उपस्थित थे।

महाविद्यालय के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन दिनांक 21 नवम्बर 2015 को माननीय मुख्यमंत्री श्री मनोहरलाल खट्टर के कर कमलों द्वारा किया गया था। उद्घाटन समारोह में पूर्व शिक्षा मंत्री श्री रामविलास शर्मा, पूर्व लोकसभा सांसद श्री धर्मबीर सिंह चौधरी, माननीय विधायक नांगल चौधरी डॉ0 अभय सिंह यादव आदि गरिमागयी हस्ती उपस्थित थे।

के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन
श्री मनोहर लाल

बैजनाथ चौधरी राजकीय महिला महाविद्यालय
नांगल चौधरी 'का निर्माण'
बैजनाथ - दुर्गादेवी चौधरी एवं उनके सुपुत्रों
विश्वनाथ, दिलीप कुमार, गोविन्द राम एवं
विमल कुमार चौधरी (नांगल चौधरी) ने अपने पूर्वजों
एवं पितृ स्व. श्री कुंजीलाल - चंपादेवी चौधरी
की पुण्य स्मृति में करवाया।
नांगल चौधरी
दिनांक : 21/11/2015

बैजनाथ चौधरी राजकीय महिला महाविद्यालय
नांगल चौधरी
के निर्माण में विशेष सहयोगी जन:-
1. श्री रामानन्द अग्रवाल सुपुत्र श्री रामेश्वर दयाल अग्रवाल
(भुंगारका वाले) नारनौल
2. श्री रामकिशन सुपुत्र श्री मुखराम सैनी
3. श्री रमेश चंद सुपुत्र श्री दान सिंह सैनी
4. श्री प्रताप सिंह सुपुत्र श्री शिवलाल (शेखावत)
सलाहकार : श्री मालाराम सरपंच (नांगल चौधरी)
आर्किटेक्ट : श्री योगेश कुमार शर्मा (जयपुर)
ठेकेदार : श्री रोहताश प्रजापत (अलीपुर)
नांगल चौधरी
दिनांक : 21/11/2015

का
शिलान्यास
श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा
श्रीमती गीता भुक्कल
राव नरेन्द्र सिंह
श्रीमती श्रुति चौधरी
श्रीमती अनीता यादव
राव दान सिंह

मानणीय बैजनाथ चौधरी जी
की प्रतिमा का अनावरण
चौधरी धर्मबीर जी
स्वामी श्री शरणानंद जी,
डा. अभय सिंह जी यादव
29 फरवरी 2020 को सम्पन्न हुआ।

माँ सरस्वती की प्रतिमा का अनावरण

बैजनाथ चौधरी राजकीय महिला महाविद्यालय
नांगल चौधरी

''दुर्गा'' 2021-2022

डॉ० अनीता तंवर
(संरक्षक एवं प्राचार्या)

डॉ० सुशीला यादव
(मुख्य सम्पादिका)

हिन्दी विभाग
श्रीमती सुनीता यादव
सम्पादिका

दीपिका (हिन्दी विभाग)
बी.ए. द्वितीय वर्ष - 2166
छात्र सम्पादिका

अंग्रजी विभाग
श्री प्रदीप यादव
सम्पादक

सुशीला (अंग्रेजी विभाग)
बी.ए. द्वितीय वर्ष - 2212
छात्र सम्पादिका

विज्ञान विभाग
श्रीमती सन्तोष यादव
सम्पादिका

रवीना (विज्ञान विभाग)
बी.एस.सी. द्वितीय (Non-Med.) - 2212
छात्र सम्पादिका

''दुर्गा''

2021-2022

हिन्दी विभाग

श्रीमती सुनीता यादव
सम्पादिका

दीपिका
बी.ए. द्वितीय वर्ष रोल नं०- 2166
छात्र सम्पादिका

बैजनाथ चौधरी राजकीय महिला महाविद्यालय
नांगल चौधरी

-: मातृभाषा का महत्व :-

किसी भी देश की संस्कृति और संस्कारों को जानने के लिए उसकी भाषा को जानना जरूरी है। मातृभाषा सिर्फ संवाद का स्वाभाविक माध्यम ही नहीं है, बल्कि किसी भी व्यक्ति या समुदाय की सांस्कृतिक पहचान भी होती है। इसलिए जरूरी है कि सरकार मातृभाषा में पढ़ाई को प्रोत्साहित करने के लिए नीति बनाए और जमीनी स्तर पर उसका पालन भी सुनिश्चित करे। कई भाषाओं की चिंताजनक स्थिति और भविष्य में उन्हें लुप्त होने से बचाने और अपने सदस्य देशों की भाषाई और सांस्कृतिक विविधता को संरक्षित रखने के लिए नवम्बर 1999 में यूनेस्को ने 21 फरवरी को अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मनाना स्वीकार किया। संयुक्त राष्ट्र की इस संस्था ने विश्व की आधी से अधिक भाषाओं के भविष्य को लेकर चिंता जाहिर करते हुए आशंका व्यक्त की है कि शताब्दी के अंत तक ये भाषाएँ प्राय: विलुप्त हो जाएंगी। ऐसा ही हमारे भारत जैसे देश में हिन्दी भाषा के साथ हो रहा है।

आज हम विचार के स्तर पर हर बच्चे की अपनी मातृभाषा में शिक्षा से सहमत है। नीतियों में हम कई कदम आगे बढ़ चुके हैं। जमीनी स्तर पर मातृभाषा का गुणगान तो करते हैं मगर शिक्षण में इसे अपनाने से कतराते हैं। मैं कहना चाहूँगी कि आज वर्तमान युग में बच्चों के अभिभावकों के मन में यह भी धारणा बन चुकी है कि अगर हमारे बच्चे अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषा के माध्यम से नहीं पढ़ेंगे तो वह अन्य बच्चों से प्रतियोगी परीक्षाओं में पिछड़ जाएंगे।

हमारे देश के संविधान में 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी को राजभाषा का दर्जा मिला। लेकिन इतना होने के बावजूद भी हमारे देश में हिन्दी भाषा की उपेक्षा हो रही है। क्योंकि हमारे देश के लोगों को पाश्चात्य संस्कृति प्रभावित कर रही है। कुछ लोग तो यह सोचते हैं कि यदि हमने अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण की तो हमें जीवन में रोजगार के अवसर अधिक मिलेंगे। हिन्दी को हीनता की दृष्टि से देखा जाता है। जबकि हिन्दी राष्ट्रभाषा, राजभाषा तथा मातृभाषा तीन भाषाओं के रूप में हमारे देश में प्रचलित है। लेकिन फिर भी हिन्दी को उतना सम्मान नहीं मिल रहा है, जितना अंग्रेजी भाषा को। मैं कहना चाहूँगी कि एक बच्चे से लेकर बड़े इन्सान तक की बात की जाए तो, वह किसी विषय या विचार को अपनी मातृभाषा में जितना अधिक आसानी से समझ पाता है उतना किसी अन्य भाषा में नहीं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र कवि ने भी इन पंक्तियों के माध्यम से कहा है –

''निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल॥''

डॉ० सुनीता यादव
हिन्दी विभाग

काम करेगा, तभी बढ़ेगा इंडिया

चारों तरफ हो खुशियों की लहर,
हर तरफ चलता गुणगान रहे।
बरसे असीम कृपा ईश्वर की,
आपके होठों पर सदा मुस्कान रहे।।

प्यारी छात्राओं,

आज हम एक ऐसे वातावरण में रह रहे हैं जहाँ महिलाओं को पुरूषों के समान अधिकार दिए गए हैं। हमें सबसे पहले उन अधिकारों के बारे में ज्ञान होना चाहिए तथा अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्तव्यों का भी ज्ञान होना चाहिए। आज देश की आबादी में 50 प्रतिशत महिलाएँ हैं। किसी भी देश की उन्नति उस देश के लोगों पर निर्भर करती है। इसका सीधा मतलब यह हुआ कि हमारे देश की 50 प्रतिशत प्रगति का दायित्व हम महिलाओं पर है। इसके लिए सबसे पहले हमें शिक्षित होने की आवश्यकता है क्योंकि शिक्षित महिला अपनी बात को दूसरों के सामन आत्मविश्वास के साथ रख सकती है। शिक्षा ग्रहण के साथ-साथ या बाद में हमें एक तरह का कौशल विकसित करना होगा ताकि हम आर्थिक रूप से आतमनिर्भर बन सके। जिस प्रकार पुरूष अनके तरह के व्यवसाय या नौकरी के माध्यम से अपने परिवार की जरूरतों का निर्वहन करता है उसी तरह हमें भी जिम्मेदारी लेनी होगी इससे न केवल आपके परिवार के अपितु आपके क्षेत्र का भी विकास होगा। उदाहरण के तौर पर यदि आप अधिक धन अर्जित करती है तो बाजार में उस धन का इस्तेमाल करेंगी, जिससे आपके क्षेत्र के दुकानदारों की बिक्री ज्यादा होगी। यदि आप अपना व्यवसाय करती है तो आपके अधिनस्थ कर्मचारियों की उन्नति होगी। कहने का तात्पर्य यह है कि आप जितना धन अर्जित करने की कोशिश करेगी, उतना ही आपके क्षेत्र का एवं देश का विकास होगा।

प्राय: यह देखा गया है कि पढ़ी-लिखी महिलाएँ घर के कार्य करना पसन्द नहीं करती। महिलाएँ अपनी समृद्धि को अपने आराम से तौलती हैं। यह मानसिकता देश के लिए घातक है। बढ़ती हुई जनसंख्या हमारे लिए वरदान हो सकती है यदि हम एक संसाधन की तरह अपने आपको इस्तेमाल करे। हमें यह कतई नहीं सोचना चाहिए कि यह काम छोटा है। अपनी योग्यता के अनुसार हमें अपने व्यवसाय या नौकरी का चयन करना चाहिए।

आइए हम सब मिलकर संकल्प लें कि देश की प्रगति में बढ़-चढ़ कर अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें।

Smt. Santosh Yadav
Assistant Professor
Dept. of Zoology

–: वर्तमान समय में जल संसाधन की प्रासंगिकता :–

जल ही जीवन है, जीवन का जनक और पोषक भी। पानी की तरलता को धार्मिक व सांस्कृतिक शक्ल में ढाला गया। हर धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यक्रम में पानी की जरूरत की बाध्यता पैदा की गई, ताकि पानी के महत्व को लोग हर वक्त अपने जेहन में रखे। पानी से सम्बन्धित रीति–रिवाजों, पूजन व गीतों को गढ़ा गया। जल स्थापत्य की भी बड़ी ही उज्जवल परम्पराएं बनाई गई।

मानव, पशु–पक्षियों को जीवित रहने तथा उनकी संवृद्धि हेतू तो जल की आवश्यकता है ही, अनके प्रकार के औद्योगिक कार्यों तथा खेती–बाड़ी के लिए भी जल एक अनिवार्य अपरिहार्यता है। भूमिगत जल की अंधाधुंध निकासी से इसका जल स्तर लगातार नीचे खिसकता जा रहा है। हमने जल संग्रहण के प्रति उदासीनता दिखाई तो विश्व को जल संकट के महाप्रलय के दिन देखने पड़ सकते हैं। जल संकट के सन्दर्भ में सबसे ज्यादा समस्या स्वच्छ जल की उपलब्धता को लेकर है। भविष्य में इस तथ्य के और अधिक विकराल रूप धारण करने की संभाव्यता भी विद्यमान है। क्योंकि दिनोदिन पानी की मांग उसकी पूर्ति की अपेक्षा बढ़ती जा रही है। जिसका मुख्य कारण तालाब, झीलों व नदियों में बढ़ता जल प्रदुषण है। परिस्थितियों के संतुलन में भी जल एक आवश्यक संघटक है। जन में हुई वृद्धि से उपजी परिस्थितियों से सारे विश्व में जल की खपत बढ़ती गई।

पृथ्वी पर इस समय मौजूद 140 करोड़ घन मीटर जल में 97.5 प्रतिशत खारा है। इसके अलावा 1.78 प्रतिशत पानी बर्फीली चोटियों और हिमनदों में जमा पड़ा है। बाकी मात्रा 0.74 प्रतिशत धरती के गर्भ में छुपा हुआ है। अपने हिस्से में मात्र 136 हजार घन मीटर जल ही बचता है। हर साल जमीन से समुद्रों की ओर 40,000 घन किमी जल बह कर जाता है जिसमें से मानव मुश्किल से 9000 घन किमी पानी का इस्तेमाल कर पाता है। औद्योगिक देशों में एक आदमी औसतन 400–500 लीटर पानी का उपभोग प्रतिदिन करता है जबकि विकासशील देशों में यदि लोगों को 20 किमी की दूरी तक पीने के लिए पानी मिल रहा है तो यह समझा जाता है कि पीने के लिए स्वच्छ जल मिल रहा है। प्रकृति भी जल के अनिश्चित वितरण के लिए जिम्मेदार है। दक्षिण अमेरिका के अराकमा नामक रेगिस्तानी इलाके में 1989 से 1994 के बीच पांच सालों में एक बूंद भी पानी नहीं बरसा। दुनिया की 60 करोड़ से ज्यादा की आबादी शुष्क क्षेत्रों में ही निवास करती है। जल की समस्या का एक और कारण यह है कि भूमिगत जल पर बढ़ती निर्भरता ने जल की निरंतरता बनाये रखने का कार्य और दुष्कर बना दिया है।

आज मानव अनेक क्षेत्रों में कल्पनातीत प्रगति के शिखरों को छूता जा रहा है लेकिन आधुनिक युग की एक दूसरी देन ने उसकी नींद भी हराम कर दी है। यह देन नहीं अभिशाप है और यह अभिशाप कई प्रदूषणों के रूप में प्रकट हो रहा है। कहीं ध्वनि प्रदुषण ने मन-मस्तिष्क के साथ हमारे शरीर को झकझोर दिया है तो कहीं जल प्रदूषण ने पेट की तरह-तरह की बीमारियों को उत्पन्न कर जीना दूभर कर दिया है। कभी कहा जाता था और आज भी सत्य है कि जल जीवन है लेकिन आज यह जल जहां-जहां अपनी निर्मलता और स्वच्छता के मूलभूत गुणों से विरक्त होता जा रहा है, वहां-वहां मानव के लिए जानलेवा होता जा रहा है। विगत 50 वर्षो में जल का न्यायोचित उपयोग नहीं किया गया। प्रचुरता से उपलब्ध बरसात के सतही जल का उपयोग नहीं किया गया। अगर बरसात के सतही जल के उपयोग कर निर्भरता कम करते हुए सीमित मात्रा वाले भूमिगत जल स्त्रोतों का अविवेकपूर्ण तरीके से दोहन किया गया तो यही वर्तमान व भावी जल संकट का मुख्य कारण है। सूखा अचानक नहीं पड़ता यह भूकम्प के समान अचानक घटित न होकर शनैः शनैः आगे बढ़ता है। जन विस्फोट जल संसाधनों का अति उपयोग/दूरूपयोग, पर्यावरण की क्षति तथा जल प्रदूषण की दुर्व्यवस्था के कारण भारत के कई राज्य जल संकट की त्रासदि भोग रहे हैं। स्वतंत्रता के बाद 55 वर्षो में देश ने काफी वैज्ञानिक एवम् तकनीकी प्रगति की है। सूचना प्रौद्योगिकी में यह एक अग्रणी देश बन गया है। लेकिन सभी के लिए जल की व्यवस्था करने में काफी पीछे है। आज भी देश में कई बीमारियों का एक मात्र कारण दूषित जल है।

आज भारत ही नहीं, तीसरी दुनिया के अनेक देश सूखा और जल संकट की पीड़ा से त्रस्त है। आज मनुष्य मंगल ग्रह पर जल की खोज में लगा हुआ है, लेकिन भारत सहित अनेक विकासशील देशों के अनेक गांवों में आज भी पीने योग्य शुद्ध जल उपलब्ध नहीं है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के जन कोष संगठन के एक अध्ययन के अनुसार यदि समय रहते जल-संग्रहण के माध्यम से जल संसाधनों का विकास नहीं किया गया तो वर्ष 2050 तक विश्व की विशाल जन हेतू ताजा पेय जल उपलब्ध नहीं हो पाएगा। राज्य सरकार द्वारा किए गए उपायों से तत्कालीन हल तो निकल सकेगा किंतु जल की गहन समस्या के दूरगामी हल के लिए परम्परागत जल स्त्रोतों यथा-मरूस्थलीय क्षेत्रों में स्थित 'बेयरा, बेरी, पार, टांकों,' आदि को पुनर्जीवित करते हुए उनके रख-रखाव को भी व्यवस्था सुनिश्चित करनी होगी एवं इस हेतु आवश्यक वित्तीय व्यवस्था भी करनी होगी।

Dr. Harnam Singh
Assistant Professor
Dept. of Geography

''साडा हक''

समाज में एक प्राणी के रूप में स्त्री एवं पुरूष एक सिक्के के दो पहलु या यूं कहें एक गाड़ी के दो पहिए हैं। यदि दोनों को गति समान होगी तभी गाड़ी ठीक से चल पायेगी वरना चरमरा कर धराशाई होने में देर नहीं लगेगी। वर्तमान सदी में कुछ दशकों से 'महिला सशक्तिकरण' एक चुनौतीपूर्ण विषय बना हुआ है। यदि भारतीय संदर्भ में देखा जाए तो यह बहुत विरोधाभासी व उलझा हुआ विषय है यहाँ पर 'यत्र नार्यस्तू पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:' जैसी दैवीय भावना का स्वरूप एक आदर्शात्मक स्थिति को सम्मुख रखता है। ठीक इसके विपरीत हमारे यहाँ के छब्ठ (नैशनल क्राइम ब्यूरो रिपोर्ट 2019) के अनुसार प्रतिदिन औसतन 88 मामले पंजीकृत हुए हैं। ये मामले तो महज समंदर में डूबे बर्फीले राक्षस की चोटी भर हैं, जो हमारे समाज का असली चेहरा बयां करते हैं। इती श्री यहीं नहीं है इसके अलावा कन्या भ्रूणहत्या, दहेज हत्या, महिलाओं के साथ लैंगिक उत्पीड़न, ऑनर किलिंग, लव जिहाद, बालिकाओं के साथ यौनाचार जैसे अपराधिक कृत्य समाचार पत्रों की सुर्खियाँ बनते रहते हैं। हाल ही में घटित – हाथरस रेप कांड, निकिता तोमर हत्याकांड जैसे उदाहरण हमारे समक्ष हैं।

हाँ, भारतीय संविधान ने संवैधानिक रूप से स्त्री व पुरूष को बराबरी का हक दिया है। उन्हें सरकार चुनने व समान काम के लिए समान मजदूरी और अपनी अस्मिता की रक्षा हेतु कानून बनाये गये हैं। डॉ. बी.आर. अम्बेडकर ने तो यहां तक कहा कि ''मैं किसी राष्ट्र की उन्नति को उस राष्ट्र में हुई महिलाओं की उन्नति के रूप में देखता हूँ।'' यानि महिलाओं को आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, लिंगभेद रहित समान रूप से बराबरी का हक जो संवैधानिक रूप से प्रदत्त है परन्तु व्यवहारिक नहीं बन पाया है। उसे पूरा कर उन्हें अपना स्वयं का निर्णय स्वयं लेने में आत्मसक्षम बनाना सच्चे अर्थ में महिला सशक्तिकरण होगा।

भारत में स्वतंत्र होने से आज तक इस दिशा में बहुत से मील के पत्थर पार किए हैं। संवैधानिक रूप से महिलाओं की स्थिति सुदृढ़ करने के लिए बहुत से कानून बने जिनमें – मातृत्व लाभ अधिनियम (1861), दहेज प्रतिषेध कानून (1961), समान वेतन एवं परिलाभ अधिनियम (1976), महिला आयोग (1990), पीसीपी एनडीटी एक्ट (1994), घरेलु हिंसा अधिनियम (2005), बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम (2006), कार्यस्थल पर लैंगिक उत्पीड़न एवं प्रतिषेध अधिनियम (2013), तीन तलाक अधिनियम (2019), स्थानीय निकाय चुनावों में आरक्षण जैसे कानून लाये गये जिससे स्थिति में सुधार लाया जा सके।

वर्तमान में केंद्रीय व स्थानीय राज्य सरकारें इस दिशा में कारगर कदम उठा रही है। उनके द्वारा महत्वपूर्ण योजनाएँ चलाई जा रही है। जैसे– बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, वन स्टॉप सैंटर, प्रधानमंत्री मातृत्व वंदन योजना, किशोरी शक्ति, आपकी बेटी–हमारी बेटी, मुख्यमंत्री विवाह शगुन योजना आदि इन सब कानूनों एवं योजनाओं के माध्यम से हम कुछ कदम जरूर तय कर पाये हैं परन्तु आज भी महिला साक्षरता एवं पुरूष साक्षरता में बहुत बड़ा फासला है। यह फासला हमें घटाना है और महिलाओं को उनका नैसर्गिक अधिकार दिलाकर उन्हें आर्थिक रूप से सक्षम एवं राजनैतिक एवं सामाजिक रूप से समानता के स्तर तक पहुँचाना है।

भारतीय युग प्रेरक स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि ''कोई भी पक्षी अपने एक खराब पंख के साथ ऊंची उड़ान नहीं भर सकता है।'' इसलिए समाज की आधी आबादी को सक्षम एवं सशक्त बनाना ही होगा। सरकार के प्रयास अपनी जगह हैं परन्तु अब जो भारतीय नारियाँ अपना मुकम्मल मुकाम हासिल कर चुकी हैं उन्हें आगे आकर अपने अधिकारों की लड़ाई बाकी सब के लिए लड़नी होगी। सभी को साथ में लेकर एक सुर में बोलना होगा, ''साडा हक एथे रख''।

Smt. Mamta Bayla
Assistant Professor
Dept. of Economics

इतिहास में संत कबीरदास जी की प्रासंगिकता दर्शाती हुई कविता

पीले अमीरस धारा गगन में झड़ी लगी।
झड़ी लगी, हाँ झड़ी लगी।।
बूँद का प्यासा घड़ा भर पाया
सपने में वो स्वाद ना आया
कहो किसे कैसे समझायें
एक बूँद की तरण लगी
पीले अमीरस धारा गगन में झड़ी लगी
प्यास बिना क्या पीवे रे पानी
प्यासे के लिए है वो पानी
बिना अधिकार कोई नहीं जानी
अमृत रस की झड़ी लगी
पीले अमीरस धारा गगन में झड़ी लगी
अमीरस पीवे अमर पद पावे
भव योनी में कबहूँ ना आवे
जरा मरण का वो दु:ख ना सावे
घट की घघरीया भरन लगी
पीले अमीरस धारा गगन में झड़ी लगी
बूँद अमीरस गुरू की वाणी
जीवन रास्ता है ये पानी
कबीर संगत में हो हमारी
डाली प्रेम की हरी भरी
पीले अमीरस धारा गगन में झड़ी लगी।

Sh. Raman Yadav
Assistant Professor
Department of History

भारतीय विदेश नीति के समक्ष चुनौतियाँ

भारतीय विदेश नीति का बुनियादी उद्देश्य भारत में घरेलू परिवर्तन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाना है । इसके जरिए हम लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्षता के अपने मूल्यों को संबोधित करते हुए भारतीय अर्थव्यवस्था एवं समाज में परिवर्तन संबंधी कार्य को संभव बनाना चाहते हैं। इसके लिए हमें एक ऐसे अनुकूल विदेशी परिवेश की आवश्यकता होती है जो शांतिपूर्ण हो और जो हमें घरेलू कार्यो पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति दे। व्यापक तौर पर हमारी विदेश नीति का उद्देश्य हमारे समाज और हमारी अर्थवयवस्था के परिवर्तन के दौर में ऐसे ही अनुकूल परिवेश का निर्माण करना है।

विदेश नीति के समक्ष चुनौतियां :-

आज का समय भारतीय विदेश नीति के लिए महान और चुनौतियों और अवसरों का समय है। यदि हमें त्वरित विकास एवं सामरिक स्वायत्तता को कायम रखते हुए भारत में घरेलू बदलाव लाना है तो हमारे सामरिक लक्ष्य वही बने रहने चाहिए। इन लक्ष्यों में लंबे समय तक परिवर्तन नहीं होगा क्योंकि इन्हें प्राप्त करने के लिए हमें समय की आवश्यकता तो पड़ेगी ही। परंतु वर्तमान आर्थिक परिवेश में इन्हें प्राप्त करना हमारे कौशल और हमारे देश के लिए एक वास्तविक चुनौती होगी। वर्तमान संकट के दौर में भारत के लिए प्रौद्योगिकियों और संसाधनों को प्राप्त करने का अवसर है। इसी प्रकार वर्तमान संकट हमें सत्ता के अंर्तराष्ट्रीय संतुलन में अपने सापेक्षिक स्थिति में सुधार लाने का भी अवसर प्रदान करता है। एक अन्य चुनौती होगी पिछले वर्षो के दौरान विदेश नीति के संबंध में प्राप्त सर्वसम्मति को कायम रखना। जैसे दबाव के वर्षो में भी हम ऐसा कर पाने में 1998 अथवा 1971 में सफल रहे थे । जैसे-जैसे संरक्षणवाद बढ़ रहा है और बाजार बंद हो रहे हैं तथा ऋण का प्रवाह वापस विकसित अर्थव्यवस्थाओं की और उनके प्रोत्साहन पैकेज और आर्थिक पुनरूत्थान के प्रयोजनार्थ जा रहा है, वैसे-वैसे हमें स्वयं के अपने घरेलु बाजार पर निर्भर होना पड़ेगा। यह भी हमें गरीब देशवासियों के विकास के लिए एक अवसर प्रदान करता है जिससे कि सही मायनों में हमारा विकास समावेशी बन सके । इसी प्रकार अन्य उदीयमान ताकतों के लिए भी अन्य देशों के साथ मिलकर कार्य करने की आवश्यकता है जिससे की भावी नई अंर्तराष्ट्रीय रूप रेखा को आकार दिये जाने के लिए नए गठबंधनओं का निर्माण किया जा सके। वैश्विक शासन एक ऐसा मुद्दा है जिसे हम इस आर्थिक संकट के पश्चात् नजरअंदाज नहीं कर सकते। पहले ही इस संकट के कारण अंर्तराष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक जैसी अंर्तराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं में सत्ता के विभाजन पर सहमति हो चुकी है। इसे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद जैसे वैश्विक शासन के राजनीतिक अंगों में भी विस्तारित करने की आवश्यकता है।

हमारा पड़ोस हमारे लिए सबसे बड़ी चुनौती और सर्वोत्तम अवसर प्रदान कर रहा है। स्पष्ट रूप से पाकिस्तान के साथ हमारा संबंध काफी दबाव में है और यह सुनिश्चित करने के लिए कि पाकिस्तान की घटनाओं का दुष्प्रभाव भारत पर ना पड़े, हमें सावधानी पूर्वक प्रबंधन करने की आवश्यकता होगी। श्रीलंका अभी-अभी आंशिक घटनाक्रमों के पूर्णता नए दौर में प्रवेश कर रहा है और हमें विशेष रूप से श्रीलंकाई तमिलों जो 23 वर्षो से चले आ रहे गृह युद्ध और लिट्टे के आतंकवाद से मुख्य रूप से पीड़ित रहे हैं, के साथ मिलकर उत्तरी और दक्षिणी श्रीलंका में उनके जीवन को दोबारा पटरी पर लाने हेतु प्रयास करने की आशा है।

Smt. Pinky Prajapat
Extension Lecturer
Dept. of Pol. Science

"हिन्दी का महत्व"

जन – जन की भाषा है हिन्दी, भारत की आशा है हिन्दी।
जिसने पूरे देश को जोड़े रखा है, वो मजबूत धागा है हिन्दी।
जिसके बिना हिन्द थम जाए, ऐसी जीवनरेखा है हिन्दी।
हिन्दुस्तान की गौरवगाथा है हिन्दी, एकता की अनुपम परम्परा है हिन्दी।
जिसके गर्भ से रोज नई कोंपले फूटती है, ऐसी कामधेनु धरा है हिन्दी।
जिसने गुलामी में क्रान्ति की आग जलाई, ऐसे वीरों की प्रस्तुति है हिन्दी।
जिसने काल को जीत लिया है, ऐसी कालजयी भाषा है हिन्दी।
सरल शब्दों में कहा जाए तो, जीवन की परिभाषा है हिन्दी॥
॥ जय हिन्द जय भारत॥

छात्र सम्पादिका
दीपिका कुमारी
बी.ए. द्वितीय वर्ष
रोल नं0 - 2166

GENDER EQUALITY

एक वक्त था जब समाज लड़कियों का पढ़ाई के लायक नहीं समझता था और आज भी ज्यादातर लोग यही समझते हैं। लड़कियाँ आज हर जगह पर अपनी जिम्मेदारी निभा रही है। पर फिर भी शिक्षा, स्वास्थय, निर्णय लेने के क्षेत्रो, वित्तीय स्वतंत्रता आदि जैसे क्षेत्रों में महिलाओं को कम आंका जाता है। महिलाओं को सेना, डॉक्टर, बिज़नेस आदि सब में अपनी हिस्सेदारी निभाने की अनुमति है और जाहिर है पुरूषों ने ही उन्हें अनुमति दी है। इसका मतलब ये है कि हमारे समाज में लैंगिक समानता बिल्कुल नहीं है और हमारा समाज एक पुरूष-प्रधान है। जिसमें हम लड़कियों को हर काम में एक पुरूष की अनुमति लेनी पड़ेगी। कभी ये सोचा है कि 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' का नारा देने की नौबत समाज में क्यों आई? क्योंकि बेटियों को ना तो बचाया जा रहा है और ना पढ़ाया जा रहा है। हमारे माता-पिता कर्जा उठाते हैं। बेटे की पढ़ाई के लिए और बेटियों की विदाई के लिए। भारत में महिलाओं के प्रति भेदभावपूर्ण व्यवहार में योगदान देता है, विवाह में दहेज प्रथा। इस दहेज प्रथा के कारण ज्यादातर भारतीय परिवार लड़कियों को बोझ समझते है। आज की शादी के इश्तिहारों में हम ये पढ़ते है कि चाहिए एक सुशील व संस्कारी लड़की लेकिन कभी ये शब्द लड़कों के लिए इस्तेमाल नहीं होते। हम पढ़े-लिखे व जॉब वाले लड़के ढूँढ़ते है अपनी बेटियों के लिए लेकिन क्या कभी एक पढ़ी-लिखी व जॉब वाली लड़की चाहिए ये इश्तिहारों में पढ़ा है? हम लैंगिक समानता की बात करते हैं कि आदमी और एक औरत समान तो क्यों एक औरत घर भी संभाले और काम भी करे। ये सुना है कि हर कामयाब आदमी के पीछे एक औरत का हाथ होता है पर ये कभी नहीं सुना कि हर कामयाब औरत के पीछे एक आदमी का हाथ होता है पर कभी सोचा है कि ऐसा क्यों नहीं सुना? हमारे समाज में आज्ञाकारी सबसे बड़ी उपाधि है जो एक औरत को मिलती है। बहू हो या बेटी। क्योंकि उसे सिर्फ और सिर्फ पुरूषों का कहना मानना होता है। ये सोचा है कि हमारे समाज में औरतों की क्या पहचान है? लैंगिक समानता तब होगी जब एक लड़की अपनी जिंदगी में क्या करना चाहती है? कैसे जीना चाहती है? उसके लिए उसे आदमी की अनुमति लेने की जरूरत नहीं होनी चाहिए उस दिन लैंगिक समानता होगी। कुछ औरतों ने लिख-पढ़ क्या लिया उनकी और मर्दो की जिंदगी एक बराबर हो गई ऐसा बिल्कुल नहीं है। यकिन मानिये आज भी सारे फैसले पुरूष ही लेते हैं। एक औरत एक घर संभालेगी वही घर चलायेगी ये कोई जबरदस्ती नहीं होनी चाहिए और अगर वो अपना कैरियर बनाना चाहे तो उसे कोई रोकने वाला नहीं होना चाहिए। लैंगिक समानता तब होगी जब हर औरत की पहचान वो खुद होगी। किसी की बेटी किसी की पत्नी होने से पहले वो खुद होगी स्वयं की पहचान। एक औरत क्यों नहीं एक आत्मनिर्भर होने की चाहत रख सकती? जिस दिन लड़कियों को कमजोर समझना समाज बंद कर देगा उस दिन लिंग भेदभाव भी नष्ट हो जायेगा। अंत में मैं सभी लड़कियों व औरतों को बस यही कहना चाहूँगी कि -

जो तेरे जहन में है उसे दिल में उतार, जो दिल में है उसे जुबां पर ला।
ये वक्त तेरा है तू ना शर्मा, बदलाव आयेगा नहीं उसे तू लेकर आ।

छात्र सम्पादिका
दीपिका कुमारी
बी.ए. द्वितीय वर्ष
रोल नं0 - 2166

–: डॉ भीमराव अम्बेडकर :–

डॉ बी. आर. अम्बेडकर एक विख्यात सामाजिक कार्यकर्ता, अर्थशास्त्री, कानूनविद, राजनेता और समाज सुधारक थे।

भीमराव अम्बेडकर जी भीमबाई के पुत्र थे और उनका जन्म 14 अप्रैल 1891 को महू सेना छावनी, केन्द्रीय प्रांत सांसद महाराष्ट्र में हुआ था।

उन्होंने दलितों और निचली जातियों के अधिकारों के लिए छुआछूत और जाति भेदभाव जैसी सामाजिक बुराइयों के खिलाफ संघर्ष किया है।

उन्होंने भारत का संविधान तैयार करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

वे स्वतंत्र भारत के पहले कानून मंत्री और भारतीय संविधान के निर्माताओं में से एक थे।

दलित वर्गो के लिए सीटों के आरक्षण हेतु बाब साहेब अम्बेडकर और पंडित मदन मोहन मालवीय जी के द्वारा पूना संधि पर हस्ताक्षर किया गया।

डॉ अम्बेडकर ने स्वतंत्र भारत के पहले कानून मंत्री के रूप में कार्यभार संभाला।

बाबासाहेब अम्बेडकर, महात्मा गांधी के हरिजन आंदोलन में भी शामिल हुए।

डॉ बी.आर. अम्बेडकर जी ने जीवन भर न्याय और असमानता के लिए संघर्ष किया।

ना मस्जिद की बात हो, न शिवालों की बात हो,
प्रजा बेराजगार है, पहले निवालों की बात हो।
मेरी नींद को दिक्कत ना भजन से ना अजान से है,
मेरी नींद को दिक्कत मरते हुये जवान और खुदकुशी करते किसान से है।

न ईश्वर न अल्लाह
और न ही राम
मेरा समाज जब था गुलाम
तब काम न आया कोई भगवान
दिलाने हम सब को सम्मान
एक ही शेर जन्मा था
भीमराव था जिनका नाम।
!! जय भीम !!

यदि आप मन से स्वतंत्र है,
तभी आप वास्तव में स्वतंत्र है ।।

राम भतेरी
बी.ए. प्रथम वर्ष
रोल नं0 - 2100

–: बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ :–

'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' अभियान केवल एक योजना या अभियान नहीं है, यह लोगों की सोच से जुड़ा सामाजिक विषय है। हमें इसके पीछे छिपी लोगों की ओछी सोच को बदलना है, जो कि कठिन कार्य है। ईश्वर के बाद केवल महिलाओं के पास सृजन की क्षमता है। जरा सोचिए वो समाज कैसा होगा, जहां महिलांए न हो ('अ नेशन विदआउट वुमन')। केवल कल्पना करने की जरूरत है। तस्वीर खुद–ब–खुद साफ हो जाएगी। ऐसा कोई काम नहीं, जो लड़कियाँ नहीं कर सकती। वो भी देश की प्रगति में समान रूप से भागीदार है। इंदिरा गांधी से लेकर कल्पना चावला तक ऐसे लाखों नाम है, जिन्होंने देश का नाम रोशन किया है। ''आइए कन्या के जन्म का उत्सव मनांए। हमें अपनी बेटियों पर बेटों की तरह ही गर्व होना चाहिए। मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि अपनी बेटी के जन्मोत्सव पर आप पांच पेड़ लगाएं।'' –प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ।'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' का शुभारंभ प्रधान मंत्री ने 22 जनवरी 2015 को पानीपत, हरियाणा में किया था। हरियाणा में ही करने का मेन कारण वहां लिंग–अनुपात में सर्वाधिक अंतर है। यह योजना पूरे देश का अध्ययन किया और सभी देशवासियों को एकजुट होकर लड़कियों की कम जनसंख्या को संतुलित करने का संकल्प किया। इस योजना का दारोमदार तीन मंत्रालयों को सौंपा गया है। ये हैं– महिला और बाल विकास मंत्रालय, स्वास्थय परिवार कल्याण मंत्रालय तथा मानव संसाधन मंत्रालय।

बेटी भार नहीं, हैं आधार
जीवन है उसका अधिकार
शिक्षा है उसका हथियार
बढ़ाओ कदम, करो स्वीकार।

मत रोको बेटी को आने से
मत डरो दुनिया के ताने से
वो तो है खुशी की चाबी
नहीं है जीवन की बर्बादी।

फूलों सी कोमल हृदय वाली होती है बेटियाँ
माँ–बाप की एक आह पर ही रोती है बेटियाँ
भाई के प्रेम में खुद को भुला देती है
अक्सर फिर भी आज गर्भ में जान खोती है बेटियाँ।

पूजा
बी.कॉम. प्रथम वर्ष
रोल नं0 – 3015

–: कविता :–

सफेदी से दीवारों का रंग बदल सकता है,
इंसान यहाँ गिर कर भी संभल सकता है।
तू कुछ बदलने की कोशिश तो कर,
तू हालात ही नहीं तकदीर बदल सकता है,
जीवन के बदलने में लगता ही क्या है।

एक-एक पल से एक पहर बनता है,
एक-एक पहर से एक दिन बनता है,
एक-एक दिन से एक साल बनता है,
एक-एक साल से ही जीवन बनता है,
पल बन जाए तो फिर बचता ही क्या है,
जीवन को बदलने में लगता ही क्या है।

सोच मिटती है तो विचार मिट जाते है,
विचार मिटते है तो संस्कार मिट जाते है,
संस्कार मिटते है तो परिवार मिट जाते है,
परिवार मिटते है तो समाज मिट जाते है,
समाज मिट जाए तो फिर बचता ही क्या है,
देश के मिटने में लगता ही क्या है।

मन भटकता है तो आचरण भटक जाता है,
आचरण भटकता है तो यौवन भटक जाता है,
यौवन भटकता है तो जीवन भटक जाता है,
जीवन भटकता है तो वतन भटक जाता है,
वतन भटक जाए तो फिर बचता ही क्या है,
सभ्यता के मिटने में लगता ही क्या है।

सुशीला
बी.ए. द्वितीय वर्ष
रोल नं0 - 2212

कोशिश कर हल निकलेगा, आज नहीं तो कल निकलेगा।

अर्जुन सा लक्ष्य रख, निशाना लगा, मरूस्थल से भी फिर, जल निकलेगा।

मेहनत कर, पौधों को पानी दे, बंजर में भी फिर, फल निकलेगा।

ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे, फौलाद का भी, बल निकलेगा।

सीने में उम्मीदों को जिंदा रख, समन्दर से भी, गंगाजल निकलेगा।

कोशिशें जारी रख, कुछ कर गुजरने की, जो कुछ थमा-थमा है, चल निकलेगा।

कोशिश कर, हल निकलेगा, आज नहीं तो, कल निकलेगा॥

अंजु
बी.ए. द्वितीय वर्ष

कविता

तू कर हिम्मत उठकर चलने की,
तेरी हिम्मत की परीक्षा अभी बाकी है।

कदम दर कदम ही सीखा है तुमने,
जिंदगी के रास्तों में दौड़ना तेरा अभी बाकी है।

रंग उम्मीद का उतरने ना देना,
जिंदगी में कई रंगीनियाँ अभी बाकी है।

देख रहा है जमाना तुम्हें घूरकर,
संभल जा थोड़ा जमाने को घूरकर देखना अभी बाकी है।

एक-एक कर साथ छूट रहा है,
देखता रह किन-किनका हाथ छूटना अभी बाकी है।

अंधेरा है राहों में और डर है निगाहों में,
चलता रह राही बनकर सुबह का पहर आना अभी बाकी है।

कोशिश करके भी हर बार जो निराशा मिली,
मत हो उदास कोशिशों का संसार अभी बाकी है।

धूप है तेज मुश्किलों की तोड़ मत इरादों को,
रास्तों की ठंडी छांव अभी बाकी है।

पतझड़ है जो अभी चरम पर,
नयी उम्मीदों का बसंत अभी बाकी है।

अंजु
बी.ए. द्वितीय वर्ष

–: बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ :–

21वी सदी में 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' नारे की अनुगूँज चारों ओर सुनवाई पड़ने लगी। इस नारे की क्या आवश्यकता है जब भारतवर्ष में प्राचीनकाल से नारी की स्तुति 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता' कहकर की जाती रही है। यहाँ तक कि असुरों पर विजय प्राप्त करने के लिए भी देवताओं को नारी की शरण में जाना पड़ा था। देवी दुर्गा ने राक्षसों का संहार किया था। विद्या की देवी सरस्वती, धनी की देवी महालक्ष्मी और दुष्टों का नाश करने वाली महाकाली की आराधना की लड़ाई में महिलाओं ने पर्दा प्रथा को त्यागकर देश को स्वतंत्रता दिलवाने में बढ़-चढ़कर भाग लिया। कविवर पंत ने नारी को 'देवी माँ', 'सहचारी', 'सखी', 'प्राण' तक कहकर सम्बोधित किया है। आज नारी चपरासी से लेकर प्रधानमंत्री के पद तक विराजमान है। पुलिस, सुरक्षा बल व सेना तक में भी उच्च पदों पर नियुक्त हैं। कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं जहाँ उसने अपनी प्रबल कर्मठता का परिचय नहीं दिया। वह हर पद पर पुरूषों से अधिक ईमानदारी से काम करती है, यह सत्य भी किसी से छिपा नहीं है। वह माँ बनकर अपने सामाजिक दायित्व को निभाती है। आज अपने महान सहयोग से देश के विकास में बराबर की सहभागी बन गई है। फिर उसे हीन-भाव से क्यों देखा जाता है। वे कौन-से कारण हैं, जिनके रहते बेटी को गर्भ में ही मार दिया जाता है। आज इन कारणों पर विचार करने की आवश्यकता है। यदि ध्यान से देखा जाए तो आजकल माता-पिता के लिए बेटी की परवरिश करना चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है, क्योंकि यौन अपराधों की संख्या बढ़ती जा रही है कि यदि हम बेटी की इज्जत की रक्षा न कर पाए तो बेटी को जन्म देने का क्या फायदा होगा। माता-पिता की यही सोच कन्या भ्रूण हत्या का प्रमुख कारण है। इसके साथ-साथ दहेज प्रथा के कारण भी लोग बेटी को आर्थिक बोझ समझते हैं। बेटी का बाप बनना अथवा नहीं समझा जाता है। बेटे वंश चलाते हैं, बेटी नहीं। आज यौन - अपराध व बलात्कार की घटनाँए भी बढ़ती जा रही हैं।

इसके अतिरिक्त बेटी को पराया धन कहकर उसकी तौहीन की जाती है। इन सभी कारणों से बेटी को जन्म से पहले ही मार दिया जाता है। यदि समस्या की गहराई में झांका जाए तो इसमें बेटी कहाँ दोषी है? दोषी तो समाज या उसकी संकीर्ण सोच है। आज बेटियों की कमी के कारण अनेक नई-नई समस्याँए उत्पन्न हो रही है। स्त्री पुरूष संख्या संतुलन बिगड़ रहा है। यदि बेटियाँ नहीं होगी तो बहू कहाँ से आएंगी। आज आवश्यकता है, बेटियों को बेटों के समान समझने की। उन्हें जीवन में आगे बढ़ने के अवसर प्रदान करने, समाज के अपराध बोझ को दूर करने की। दहेज जैसी कुप्रथा को समाप्त किया जाना चाहिए।

कन्या भ्रूण हत्या अपनी कब्र खोदने के समान है ।यदि इनकी आहों को रोक न पांएगे अपने किए पर पछतांएगे हम। इस दिशा में सरकार ने अब अनेक कदम उठाए है ताकि बेटियों को बचाया जा सके और जिन कारणों से बेटियों को बोझ समझकर जन्म से पहले ही मार दिया जाता है, उन्हें दूर किया जा सके। सरकार की इन योजनाओं में 'बेटी धन' योजना प्रमुख है। इसमें बेटी की शिक्षा व विवाह में अधिक सहायता की जाती है।

'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' नारे के दूसरे भाग 'बेटी पढ़ाओ' पर भी विचार करना जरूरी है। 'बेटी पढ़ाओ' का सम्बंध नारी-शिक्षा से है। नारी हो या पुरूष शिक्षा सबके लिए अनिवार्य है किन्तु बेटी जीवन के सम्बंध में शिक्षा का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है तो वह माता-पिता पर बोझ न बनकर उनका बेटों के समान सहारा बन सकती हैं। बेटी बड़ी होकर देश की भावी पीढ़ी को योग्य बनाने के कार्य में उचित मार्गदर्शन कर सकती है। आज बेटी बचाने की आवश्यकता के साथ-साथ बेटियों को शिक्षित, आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी के साथ बनाने की भी आवश्यकता है। इसी से बेटियों व नारियों संबंधी अनेक समस्याओं का समाधान सम्भव है। तभी वे बराबरी और सम्मान के साथ जीवन व्यतीत कर सकेंगी।

करीना
बी.ए. प्रथम वर्ष
रोल नं0 - 2064

–: एक नन्ही–सी पुकार :–

माँ मेरी बात मानों तो मैं अर्ज करती हूँ। गला दबाकर मार दो मैं साँस लेने से डरती हूँ।
और गला दबाने की जरूरत ही नहीं, मुझे गर्भ में ही मार दो।
क्योंकि अब मैं खुले आसमां में आने से डरती हूँ।
ऐसा नहीं है कि मुझे माता–पिता, भईया–भाभी का प्यार नहीं चाहिए,
मैं भी मिट्टी का एक घर बनाके सजाती, अपने गुड्डे–गुड्डियों की शादी उसमें रचाती।
और हो जाती मुझसे कोई भूल, भूल से तो तुम डाटती धमकाती।
मगर ममता भी मिलती मुझको तुम्हारी जब तुम,
गोद में बैठाकर प्यार से मुझे समझाती।
अब जब भी मुझे निर्भया, प्रियंका और सरिता दीदी की याद आती है,
सच कहती हूँ माँ मेरी रूह काँप जाती है और जैसे–तैसे सोने की अगर करती हूँ मैं कोशिश,
एक पल नींद नहीं आती, मुझसे मेरी नींद रूठ जाती है।
मैं भी स्कूल में जा पढ़ना चाहती हूँ,
मम्मी–पापा तुम सबका नाम रोशन करना चाहती हूँ।
मगर ये ख्वाब तो अब ख्वाब ही रहेंगे, जब तक ये दरिंदे यूं ही खुले घूमते रहेंगे।
फिर वो नन्ही परी गर्भ में ही अपनी माँ से कहती है,
मुझे गर्भ में ही मार दो, पहले मैं मरने से डरती थी,
मगर अब मैं जन्म लेने से डरती हूँ।

–: गौरवशाली भाषा : हिंदी :–

विश्व एक रंगमंच है, यहाँ सभी देशों की अपनी रफ़्तार है,
मैं हिंदुस्तानी हूँ और मेरी मातृभाषा हिंदी से मेरी पहचान है।

मेरी माँ 'भारत माता' की प्यारी हिंदी है, 22 भाषाओं से जुड़े हैं हम सब
इसलिए तो हमारी माता स्वर्ण आभूषणों से सजी है।

जात–पात, रंग–रूप, ऊँच–नीच से हम विभाजित नहीं होते,
जब गौरव और सम्मान मिलता है, तब भी हम अपनी भाषा हिंदी को नहीं छोड़ते।

स्वामी विवेकानंद एक सच्चे देशभक्त थे, विदेश में जाकर भी, उन्होंने देशभक्ति का चोला नहीं छोड़ा
अमेरिका में मंच पर खड़े होकर उपस्थित लोगों को भाईयों और बहनों कहकर संबोधित किया
तालियों की गूँज थी और उनकी मनोभावनाओ को रोकने वाला कोई नहीं था।

हिंदी का महत्व तो कोई स्वतंत्रता सैनानियों से जाकर पूछे
समझाने से लेकर, उनके आंतरिक बदलाव का प्रेरणा स्त्रोत हमारी भाषा थी।

आज नुक्कड़ नाटक से लेकर, कोई भी क्रांतिकारी वार्ता तक सब हमारी भाषा की सिखाई है

कहने को तो वर्ण लघु है,
पर हमारी भावनाएँ हमारी भाषा की सबसे छोटी इकाई है।

लोग कहते हैं मेरी भाषा अनूठी है, अगर छोड़ दूँ मैं अपनी हिंदी भाषा बोलना
तो लोग कहेंगे, ये देशभक्त झूठी है।

जहाँ आजादी के लिए लड़े हैं, वहाँ अपनी भाषा को कैसे छोड़ दे,
लिखने लगे है अगर किस्से, तो क्यूँ भाषा का किस्सा अधूरा छोड़ दूँ।

जन्म के समय, अक्षरों का ज्ञान नहीं था,
बड़े होकर, किस्मत का ताला खोलना चाहा, सही ताला नहीं था।
आत्मनिर्भर बनना चाहा, पर सलीका नहीं था
और जब पहला शब्द बोलना चाहा,
तो शब्द 'माँ' का वर्णन हिंदी में ही था।

खूबसूरती से लिखना है अगर मुझे अपनी भाषा का अफसाना,
कैसे अभिव्यक्त करूँ, अपनी भाषा की महानता,
अत्यधिक मुश्किल है, सारे जग को समझाना।

आजादी से लेकर आज तक, हम भाषाओं से जुडे हैं।
कोई हरियाणवी, कोई आसामी, कोई भूटानी नहीं,
हम सब हिंदुस्तानी हैं।

ज्ञान का भंडार है, महान कवियों की काव्य रचना
और महापुरूषों का ज्ञान है इसमें।

''मेरी भाषा मेरी कलम में है, गाना चाहूँ तो वो गज़ल में भी है,
मेहनत से सींचना चाहूँ, तो वो फसल में भी है,
और उसे सुंदरता से खिलता देखना चाहूँ, तो वो कमल भी है।

सीमा
बी.ए. तृतीय वर्ष
रोल नं0 - 0019

–: वृद्धाश्रम :–

जिंदगी के इस अंतिम मोड़ पर, वह अपनों से ही धोखा खा गई।
वह गैरों से नहीं, अपनों से ही मात खा गई ॥

जिसको देकर जन्म वह, फूली नहीं समाई थी।
सुनाते हुए लोरी उसको, आनन्द असीम पाई थी ॥

अपने सुनहरे सपनों का, महल नित नया खड़ा करती थी।
लाखों कष्ट सहकर भी, बेटे पर आँच न आने देती थी ॥

लेकिन आज उसी बेटे ने, उसके सपनों की दीवार गिरा दी।
बेटे ने माँ से प्यार जताया, फिर कुछ ये फरमाया।

माँ शहर में खुला है वृद्धाश्रम, वहाँ वृद्धों को नहीं करना पड़ता श्रम।
वृद्ध वहाँ पर फरमाते हैं आराम, और बस रटते हैं प्रभु का नाम ॥

चलो आपको भी वहीं छोड़ आएँ, फिर आप भी वहाँ आराम फरमाइएँ ॥

आपको तो पता ही है, आज ट्रेडिशन बदल रहा है, बूढ़ों को घर में नहीं वृद्धाश्रम में रखा जा रहा है।
फिर भी आप घर में रहोगी, तो मैं भी ट्रेडिशनल कहलाऊँगा, और अपने दोस्तों में खिल्ली उडवाऊँगा ॥

सुनकर माँ को लगा बड़ा सदमा, जैसे किसी ने आसमान से गिरा दिया।
माँ गिड़गिड़ाकर बोली, बेटा कुछ तो रहम करना, अपने दोस्तों के आने पर
चाहे मुझे कोठरी में बंद रखना, पर मुझे घर से मत निकालना ॥

तभी बेटे ने तेवर बदले, बोला सुन री बुढ़िया, यहाँ से फुट ले,
इसी में तेरी भलाई है तुमने पाला था मुझे, उसकी कीमत आज ले ले ॥

पर हमारा पीछा जल्दी से छोड़ दो।
देखकर माँ बेटे के तेवर, अंदर तक सिहर गई।
समझा था जिसे बुढापे की लाठी, आज वह हाथ से फिसल गई
और माँ बेबस खड़ी रह गई ॥

जिसको समझा था अपना सहारा, आज उसी ने वृद्धाश्रम का रास्ता दिखा दिया।
शायद! विधाता ने सही लिखा है भाग्य में, बुढिया बेटे को आशीर्वाद देकर वृद्धाश्रम में आ गई।
जीवन के अंतिम मोड़ पर वह अपनों से धोखा खा गई, वह गैरों से नहीं, अपनों से धोखा खा गई ॥

ममता
बी.ए. द्वितीय वर्ष
रोल नं0 - 2078

—: बन्द करो ये भेदभाव :—

समझते है सभी बेटे को ही नेक
वंश चलाना चाहता है यहाँ हर एक
रो पड़ते है अच्छे-अच्छे बच्ची को जन्म देने पर
क्या हो गई धरती की सूरत मेरे मौला,
कोई तबाही का सामान तू ही ऊपर से फैंक
खुद-खुदा ने बनाकर अपने हाथों से भेजा जमीन पर एक खिलौना
एक ही घर में खुशबु नहीं फैलाती,
कई घरों का एक साथ महकाती है कोना-कोना।
बिना लड़की भूल जाओ लोगों धरती पर जीवन का अस्तित्व,
हो जाए अगर दो से भी ज्यादा तो भी कभी मत रोना।
मारकर बेकसूर बच्चियों को बताओ क्या हासिल करोगे,
खुद को ही खुद के भविष्य का कातिल करोगे।
कोई तोहफा, उपहार, सम्मान नहीं मिलता ऐसा करने पर,
खुद को ही दरिंदो की दुनिया में शामिल करोगे।
क्यूं लहराती अधपकी फसल को काट रहे हो,
कयूं सुंदर फूलों को गंदगी में डालकर काँटे अपनी खातिर छाँट रहे हो।
बंद करो ये खौफनाक घिनौनी हरकतें आज अभी से,
घोटकर गला जिंदगानी का क्यूं हर तरफ मौत बाँट रहे हो।
अरे कन्या तो एक ऐसा अद्भुत अनोखा गुलशन है,
पतझड़ के मौसमों में भी जिसमें खुशबु रहती हरदम है।
मत उजाडो अपने हाथों ही भविष्य को लोगों
लड़कियाँ अब बोझ नहीं रही देखो चारों तरफ,
कहाँ लड़कियाँ अब लड़कों से कम है।
सबको मिलाकर इस कुकर्म से सख्ती से निपटना होगा,
खुद बुजुर्गो को लड़कियों को बचाने के लिए माँ की कोख से लिपटना होगा।
अरे हमने भी तो कभी ऐसी किसी पवित्र कोख से जन्म लिया था,
सबको मिलकर जमीन की इस जन्नत का महत्व समझना होगा।
दूसरे को मारने से पहले जरा खुद भी खाकर देखो जहर,
क्यूं मानवता के दुश्मन बनकर, अपने ही घरों में मचाते हो कहर।
अगर बंद आज अभी से नहीं करोगे ये लड़का-लड़की वाला अंधविश्वास,
तो किसी दिन सिर्फ लड़को से भरकर रह जाएंगे सारे गाँव, शहर॥

राखी
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष
रोल नं0 - 0008

–: स्लोगन :–

बिना किसी मेहनत के तुम फल कैसे पाओगे,
बेटी नहीं बचाओगे तो, बहू कहाँ से लाओगे,
जितना तुमने बोया है, उतना ही तुम पाओगे ।।

कलियों को खिल जाने दो, मीठी खुशबु फैलाने दो,
बंद करो उनकी हत्या, अब जीवन ज्योत जलाने दो ।।

–: सुविचार :–

जो अब तक नहीं खौला, वो खून नहीं पानी है।
जो देश के काम ना आए, वो बेकार जवानी है ।।

राखी
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष
रोल नं0 - 0008

–: माँ :–

होती है बड़ी प्यारी माँ,
होती है सबसे न्यारी माँ।
सुख सारे देकर हमको,
दुःख सारे ढोती है माँ।
ममता का सागर है माँ,
अब-सा-माँ का विस्तार है।
त्याग मूर्ति है प्रकृति-सी,
धरती-सा-माँ का प्यार है।
सदा प्यार हमको देती है माँ,
दयालु बहुत होती है माँ।
दुःख जरा भी हो हमें तो,
सुबक-सुबक रोती है माँ।
माँ-सा कोई न दूजा जग में,
माँ नदियों-सी बहती है।
माँ की सेवा करने वालों को,
कोई कमी नहीं रहती है।

मनीषा
बी.ए. तृतीय वर्ष

–: समय और स्थिति कभी भी बदल सकती है :–

चिड़िया जब जीवित रहती है तब वो कीड़े-मकोड़े को खाती है।
जब चिड़िया मर जाती है तब कीड़े-मकोड़े उसे खा जाते है।
इसलिए इस बात का ध्यान रखो की समय और स्थिति कभी भी बदल सकते हैं।
इसलिए कभी किसी का अपमान मत करो। कभी किसी को कम मत समझो।
तुम शक्तिशाली हो सकते हो पर समय तुमसे भी शक्तिशाली है।
एक पेड़ से लाखों माचिस की तिलियाँ बनाई जा सकती है।
पर एक माचिस की तिली से लाखों पेड़ जल भी सकते हैं।
कोई चाहे कितना भी महान क्यों न हो जाए पर
कुदरत कभी भी किसी को महान बनने का मौका नहीं देती।

कंठ दिया कोयल को तो रूप छीन लिया, रूप दिया मोर को तो इच्छा छीन ली।
दी इच्छा इन्सान को तो सन्तोष छीन लिया, दिया सन्तोष सन्त को तो संसार छीन लिया।

इन्सान दुनिया में तीन चीजों के लिए जीता है :-
1. मेरा मकान ऊँचा हो। 2. मेरा लिबास अच्छा हो। 3. मेरा नाम ऊँचा हो।
लेकिन इन्सान के मरते ही खुदा उसकी तीनों चीजें सबसे पहले बदल देता है।
1. मकान - कब्रिस्तान 2. लिबास - कफन 3. नाम - स्वर्गीय

मत करना कभी भी गुरूर अपने आप पर ऐ इन्सान !
खुदा ने तेरे और मेरे जैसे कितनों को मिट्टी से बनाकर मिट्टी में मिला दिया।
यह जिन्दगी जैसी भी है बस एक ही बार मिलती है।
इसलिए सबके साथ मिल-जुलकर रहो।
सबके चेहरे पर मुस्कुराहट लाओ और खुद भी मुस्कुराओ।

प्रिया
बी.ए. प्रथम वर्ष
रोल नं0 - 2103

–: हिंदी दिवस पर कविता :–

संस्कृत की एक लाड़ली बेटी है ये हिन्दी। बहनों को साथ लेकर चलती है ये हिन्दी।
सुंदर है, मनोरम है, मीठी है, सरल है, ओजस्विनी है और अनूठी है ये हिन्दी।
पाथेय है, प्रवास में, परिचय का सूत्र है, मैत्री को जोड़ने की सांकल है ये हिन्दी।
पढ़ने व पढ़ाने में सहज है, ये सुगम है, साहित्य का असीम सागर है ये हिन्दी।
तुलसी, कबीर, मीरा ने इसमें ही लिखा है, कवि सूर के सागर की गागर है ये हिन्दी।
वागेश्वरी का माथे पर वरदहस्त है, निश्चय ही वंदनीय मां-सम है ये हिंदी।
अंग्रेजी से भी इसका कोई बैर नहीं है, उसको भी अपनेपन से लुभाती है ये हिन्दी।
यूं तो देश में कई भाषाएं और हैं, पर राष्ट्र के माथे की बिंदी है ये हिन्दी।

दीपिका
बी.ए. द्वितीय वर्ष
रोल नं0 - 2198

–: कविता :–

राह में मुश्किल होगी हजार, तुम दो कदम बढ़ाओ तो सही।
हो जाएगा हर सपना साकार, तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।
मुश्किल है पर इतना भी नहीं, कि तू कर ना सके।
दूर है मंजिल लेकिन इतनी भी नहीं, कि तू पा न सके।
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।
एक दिन तुम्हारा भी नाम होगा, तुम्हारा भी सत्कार होगा।
तुम कुछ लिखो तो सही, तुम कुछ आगे पढ़ो तो सही।
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।
सपनों के सागर में कब तक गोते लगाते रहोगे, तुम एक राह है चुनो तो सही।
तुम उठो तो सही, तुम कुछ करो तो सही।
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।
कुछ ना मिला तो कुछ सीख जाओगे, जिंदगी का अनुभव साथ ले जाओगे।
गिरते पड़ते संभल जाओगे, फिर एक बार तुम जीत जाओगे।
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही॥

अंशिका
बी.ए. द्वितीय वर्ष
रोल नं0 – 2062

–: बेटी बचाओ :–

ओस की बूँद–सी होती है बेटियाँ, पापा की प्यारी और सब की दुलारी होती है बेटियाँ।

माँ–बाप के दर्द में हमदर्द होती है बेटियाँ, रोशन करेगा बेटा तो एक ही कुल

दो–दो फुलों की लाज होती हैं बेटियाँ, हीरा अगर है बेटा तो सच्चा मोती है बेटियाँ

काँटो की राह में चलती है बेटियाँ, ओरों की राह में फूल बनती है बेटियाँ

कहने को पराई अमानत है बेटियाँ, पर बेटों से भी बेहतर अपनी होती है बेटियाँ

बेटा है आँख तो पलक है बेटियाँ, जीवन का सारांश है बेटियाँ

बेटी है धन पराया होती यह हम सुनते आये, दर्द–विदाई का क्या आज समझ में आया

गम और खुशी का रिश्ता कैसा, यह अजीब है भाई, मेरी परछाई मुझसे ले रही विदाई ॥

–: माँ :–

माँ तुम दुआ हो, माँ तुम दवा हो।
संसार का कोई ऐसा बंधन, जो तुमसे बंधा नहीं है।
माँ रिश्तों में सबसे बाद, तुम आओ ऐसा कभी हुआ नहीं है।
जीवन है इसको साबित करने का, हक तुम्हारे अलावा दूजा कोई हुआ नहीं है।
माँ तुम दुआ हो, माँ तुम दवा हो
जिन्दगी की कोई आबोहवा नहीं है, माँ तुम मंदिर हो माँ तुम मस्जिद हो,
माँ तुमसे बड़ी कोई उपासना नहीं है।
माँ तुम धन हो, माँ तुम धर्म हो, तुमसे बड़ी सीख की कोई पाठशाला नहीं है।
जीवन को समझना है तो माँ को समझ लो, नहीं तो जीवन की कोई मान्यता नहीं है।
माँ तुम मन हो, माँ तुम धन हो,
तुमसे बड़ी शक्ति क्या होगी, इसे तय करने वाला कोई रब हुआ नहीं है।
माँ तुम दुआ हो, माँ तुम दवा हो।

I Love You Maa

कविता
बी.ए. तृतीय वर्ष
रोल नं0 - 0101

–: बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ :–

जो बेटे नहीं कर पाते वो बेटियाँ करके दिखाती हैं, फिर भी न जाने समाज में सम्मान क्यों नहीं पाती हैं ?

अब न बनाओ कोई नया किस्सा, बेटियाँ भी होती है समाज का हिस्सा।

बेटा अंश है तो बेटी वंश है, बेटा आन है तो बेटी शान है।

छोटी सी उम्र में इन्हें ना ब्याहो, बेटी है यह, इसे तुम पढ़ाओ–लिखाओ।

कंधो से कंधा मिलाकर खड़ी हो गई है, शिक्षा पाकर एक बेटी बड़ी हो गई है।

बेटी है इसे तुम बोझ न मानना, इसकी शिक्षा में कोई बाधा न डालना।

नए बदलते भारत में बदल लो अपनी सोच, बेटियाँ बनती है सहारा नहीं होती हैं बोझ।

बेटी है कुदरत का अनमोल उपहार, जीने और पढ़ने का भी दो अधिकार।

नेहा
बी.ए. प्रथम वर्ष
रोल नं0 – 112

–: हिंदी भाषा :–

प्रकृति की पहली ध्वनि ॐ है, मेरी हिंदी भाषा भी, इसी ॐ की देन है।
देवनागरी लिपि है इसकी, देवों की कलम से उपजी,
बांगला, गुजराती, भोजपुरी, डोगरी, पंजाबी और कई, हिंदी ही है इन सब की जननी।
प्रकृति की हर एक चीज अपने में सम्पूर्ण है, मेरी हिंदी भाषा भी अपने में सम्पूर्ण है।
जो बोलते हैं वही लिखते हैं, मन के भाव सही उभरते हैं।
हिंदी भाषा की तुम्हें, प्रकृति के समीप ले जाएगी,
मन की शुद्धि तन की शुद्धि, सहायक यह बन जाएगी।
कुछ हवा चली है ऐसी यहाँ, कहते हैं इस मातृभाषा को बदल डालो।
बदल सको क्या तुम अपनी माता को, मातृभाषा का क्यों बदलाव करो।
देवों की भाषा का क्यों तुम तिरस्कार करो, बदल सको तो तुम अपनी सोच को बदल डालो,
हर इक भाषा का तुम दिल से सम्मान करो।
हिंदी की जड़ों पर आओ हम गर्व करें, हिंदी भाषा पर आओ हम गर्व करें॥

रूचि चौधरी
बी.कॉम. प्रथम वर्ष
रोल नं0 – 3003

कविता

देश आज तरक्की पर है
लेकिन एक समस्या अब भी है,
वो है सिर्फ बेरोजगारी।

पढ़-लिख कर डिग्रीयाँ पा ली,
लेकिन नौकरियाँ कहाँ है,
यही तो एक बीमारी है,
वो है सिर्फ एक बेरोजगारी है।

खुशियों का कल ढूँढ़ना होगा,
बेरोजगारी का हल ढूँढना होगा।

सरकारी नौकरी की आस छोड़ दिया,
फिर भी बेरोजगारी ने युवाओं को तोड़ दिया।

आत्मविश्वास और हौसला अभी नहीं हारे हैं,
ये अलग बात है कि हम बेरोजगारी के मारे हैं।

तकनीकि कमाल दिखाना होगा,
देश में बेरोजगारी को मिटाना होगा॥

नीतू
बी.ए. द्वितीय वर्ष
रोल नं0 - 2111

-: शिक्षक :-

जीवन में जो राह दिखाए, सही तरह चलना सिखाए।
मात-पिता से पहले आता, जीवन में सदा आदर पाता।

सबको मान प्रतिष्ठा जिससे, सीखी कर्त्तव्यनिष्ठा जिससे।
कभी रहा न दूर मैं जिससे, वह मेरा पथदर्शक है जो।
मेरे मन को भाता - वह मेरा शिक्षक कहलाता।

कभी है शांत, कभी है धीर, स्वभाव में सदा गंभीर।
मन में दबी रहे ये इच्छा, काश मैं उस जैसा बन पाता,
जो मेरा शिक्षक कहलाता॥

मनीषा
बी.ए. प्रथम वर्ष
रोल नं0 - 3017

–: बेटी :–

जब–जब जन्म लेती है बेटी,
खुशियाँ साथ लाती है बेटी।

ईश्वर की सौगात है बेटी,
सुबह की पहली किरण है बेटी।

तारों की शीतल छाया है बेटी,
आंगन की चिड़िया है बेटी।

त्याग और समर्पण सिखाती है बेटी,
नये–नये रिश्ते बनाती है बेटी।

जिन घर जाए, उजाला लाती है बेटी,
बार–बार याद आती है बेटी।

बेटी की कीमत उनसे पूछो,
जिनके पास नहीं है बेटी ॥

अन्नु कुमारी
बी.कॉम. प्रथम वर्ष
रोल नं0 – 3030

–: दहेज प्रथा :–

दहेज समाज की सबसे बड़ी कुरीति है,
इसके ही कारण स्त्रियों की बुरी स्थिति है।

दहेज लेना मत समझो शान,
इसने ली है बहुत मासूमों की जान।

घिनौनी सोच से बाहर आओ,
दहेज प्रथा नष्ट कराओ।

बेटी–बेटा एक समान, दहेज प्रथा समाज में कौढ़ समान।
मुहिम नहीं आन्दोलन बनाओ, दहेज का अब नामोनिशान मिटाओ।

अब रोकनी है बर्बादी,
बंद करो खर्चीली शादी।

अनामिका
बी.ए. प्रथम वर्ष
रोल नं0 – 2081

–: बचपन :–

बचपन की वो बातें, वह हंसी मुलाकातें,
दोस्तों के साथ बोलना, शाम को पढ़ना,
और रात को सो जाना, कोई बात का टेंशन नहीं,
किस बात का फिक्र नहीं।
बचपन तो बीत गया, पर बचपन अभी याद है।
बाबा का चेहरा पता नहीं, पर पापा के कंधे याद है।
अब कंधे तो थोड़े कमजोर हुए, पर उनमें होश और जोश अपार है।
बचपन के खेल तो भूल गए, पर उनके लिए, मम्मा का थप्पड़ याद है।

दीपिका
बी.ए. द्वितीय वर्ष
रोल नं0 - 2198

–: नारी :–

जहाँ झाँसी की ''मनु'' उठा तलवार बनी थी लक्ष्मीबाई,
उसी धरा पर आज की नारी, फिर क्यूँ है सकुचाई।

बहुत हो रहे जुल्म अब उन पर, और बहुत आघात,
अब क्यूँ सहे तू अत्याचार, और क्यूँ दाबे मन में बात।

तुमने तो है बहुत सहा, नहीं मिला बराबर का मान,
मिला कदम अब पुरूषों से, बढ़ा नारी का सम्मान।

याद करो उस नारी को, जो लाई थी देश में आंधी,
बनी देश की मुखिया पहली ''इंदिरा गांधी''।

मान बढ़ाया जिसने देश को देकर अपना स्वर,
कहते जिनको ''स्वर कोकिला'' नाम लता मंगेशकर।

याद कर इन्हीं नारी को, बढ़ा इच्छाशक्ति,
निकल आ परदे के बाहर, बन जा देश की प्रगति।

कोमल है कमजोर नहीं तू, शक्ति का नाम ही नारी है,
जग को जीवन देने वाली, मौत भी तुझसे हारी है॥

निशु
बी.ए. द्वितीय वर्ष
रोल नं0 - 2098

–: प्रकृति की लीला न्यारी :–

प्रकृति की लीला न्यारी, कहीं बरसता पानी, बहती नदियाँ,
कहीं उफनता समंद्र है, तो कहीं शांत सरोवर है।
प्रकृति का रूप अनोखा कभी, कभी चलती साए-साए हवा,
तो कभी मौन हो जाती, प्रकृति की लीला न्यारी है।
कभी गगन नीला, लाल, पीला हो जाता है,
तो कभी काले-सफेद बादलों से घिर जाता है,
प्रकृति की लीला न्यारी है।
कभी सूरज रोशनी से जग रोशन करता है,
तो कभी अंधियारी रात में चाँद-तारे टिमटिमाते हैं,
प्रकृति की लीला न्यारी है।
कभी सूखी धरा धूल उड़ती है,
तो कभी हरियाली की चादर ओढ़ लेती है,
प्रकृति की लीला न्यारी है।
कहीं सूरज एक कोने में छुपता है,
तो दूसरे कोने से निकलकर चौंका देता है,
प्रकृति की लीला न्यारी है।

आकांक्षा
बी.कॉम. प्रथम वर्ष
रोल नं0 - 3007

–: आजादी :–

पंछी है कैद अगर, तो उड़ने में कर मदद तू।
रात है काली अगर, दिया जला कर रोशन कर तू।
बीत गए कई साल रूढ़िवादी विचारो में उलझ कर, सुलझा मन के भाव तू।
औरत आदमी या हो कोई बच्चा, सबके जीवन का कर सम्मान तू।
तोड़ दे दीवारे सारी, आगे बढ़ विजई राह पर।
उन वीरों ने क्या पाया, अगर तू अब भी डर में खोया।
उठ जा तू छू ले आसमान, आजादी पे है सब का हक।

निशा
बी.ए. प्रथम वर्ष
रोल नं0 - 2051

–: कविता :–

कभी काली स्लेट पर चाक से, उज्जवल भविष्य का सूरज उगाया
ढाल बनकर के हर मुश्किल से बचाया।
कभी हक के लिये लड़ना सिखाया, कभी गलती बताकर, कभी गलती छुपाकर,
एक सच्चे गुरू का फर्ज़ निभाया,
कभी माता–पिता बन दी सलाह, कभी दोस्त बन हौसला बढ़ाया।
आज कहते है उन टीचर्स का बड़ा सा थैंक यू, जिन्होंने हमें इस काबिल बनाया।
गुरू बिन ज्ञान नहीं, गुरू बिन ज्ञान नहीं रे,
अंधकार बस तब तक ही है, जब तक है दिनमान नहीं रे।
मिले न गुरू का अगर सहारा, मिटे नहीं मन का अंधियारा।

पूजा
बी.ए. प्रथम वर्ष
रोल नं0 – 3029

–: बेटी बचाओ :–

मैं भी लेती श्वास हूँ, पत्थर नहीं इंसान हूँ
कोमल मन है मेरा, नहीं भोला सा है चेहरा।
जज़बातों से जीती हूँ, बेटा नहीं, पर बेटी हूँ
कैसे दामन छुड़ा लिया, जीवन से पहले ही मिटा दिया
तुझ से ही बनी हूँ, बस प्यार की भूखी हूँ
जीवन पार लगा दूँगी, अपनालो, मैं बेटा भी बन जाऊँगी
दिया नहीं कोई मौका, बस पराया बनाकर सौदा
एक बार गले से लगा लो, फिर चाहे हर कदम आज़मालो
हर लड़ाई जीत कर दिखाऊंगी, मैं अग्नि में जलकर भी जी जाऊँगी
चंद लोगों की सुन ली तुम ने, मेरी पुकार ना सुनी
मैं बोझ नहीं, भविष्य हूँ, बेटा नहीं, पर बेटी हूँ।

अंकिता बाई
बी.ए. प्रथम वर्ष
रोल नं0 – 2016

–: जीवन की यात्रा :–

पूछा जो मैंने एक दिन खुदा से, अंदर मेरे ये कैसा शोर है,
हँसा मुझ पर फिर बोला, चाहतें तेरी कुछ और थी,
पर तेरा रास्ता कुछ और है।
रूह को संभालना था तुझे, पर सूरत सँवारने पर तेरा जोर है,
खुला आसमान, चाँद, तारे चाहत है तेरी,
पर बन्द दीवारों को सजाने पर तेरा जोर है।
सपने देखता है खुली फिजाओं के,
पर बड़े शहरों में बसने की कोशिश पुरजोर है॥

कृष्णा कुमारी
बी.ए. प्रथम वर्ष
रोल नं0 - 2003

–: शिक्षा :–

अंधकार को दूर कर जो प्रकाश फैला दे, बुझी हुई आश में विश्वास जो जगा दे
जब लगे नामुमकिन कोई भी चीज, उसे मुमकिन बनाने की राह जो दिखा दे वो है शिक्षा।
हो जो कोई असभ्य, उसे सभ्यता का पाठ पढ़ा दे, अज्ञानी के मन में जो ज्ञान का दीप जला दे
हर दर्द की दवा जो बता दे... वो है शिक्षा।
वस्तु की सही उपयोगिता जो समझाए, दुर्गम मार्ग को सरल जो बनाए।
चकाचौंध और वास्तविकता में अंतर जो दिखाए, जो ना होगा शिक्षित समाज हमारा।
मुश्किल हो जाएगा सबका गुजारा, इंसानियत और पशुता के बीच का अन्तर है शिक्षा।
शांति, सुकून और खुशियों का जन्तर है शिक्षा
भेदभाव, छुआछूत और अंधविश्वास दूर भगाने का मन्तर है शिक्षा।
जहाँ भी जली शिक्षा की चिंगारी, नकारात्मकता वहाँ से हारी।
जिस समाज में हो शिक्षित सभी नर-नारी, सफलता-समृद्धि खुद बने उनके पुजारी।
इसलिए आओ शिक्षा का महत्व समझे हम, आओ पूरे मानव समाज को शिक्षित करे हम॥

संतरा
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष (Med.)
रोल नं0 - 0018

LIFE STRUGGLE

है कौन इस जहां में जो, न करता कोई बहाना है,
रखो विश्वास आगे बढ़ो, यही खुद को समझाना है।
जो हैं करते बहाने सौ, काम नहीं कुछ कर पाते हैं,
रह जाते हैं पीछे हमेशा, और बहाने बनाते हैं।
खुश रहो हमेशा, काम करो, परिणाम हमेशा अच्छा होगा,
मिलेगा फल उसे ही यहाँ, जो कड़ी मेहनत का पक्का होगा।
गिरना भी अच्छा है, औकात का पता चलता है।
बढ़ते हैं जब हाथ उठाने को, अपने का पता चलता है।
जिन्हें गुस्सा आता है, वो लोग सच्चे होते हैं।
मैंने झूठों को अक्सर, मुस्कुराते हुए देखा है...॥
सीख रहा हूँ अब मैं भी इंसानों को पढ़ने का हुनर,
सुना है मैंने चेहरे पे किताबों से ज्यादा लिखा होता है।

आशा कुमारी
बी.ए. प्रथम वर्ष
रोल नं0 - 2179

–: बेटी बचाओ बेटी पढाओ :–

जीवन का आधार है बेटियाँ, किसी पुष्प का सार है बेटियाँ
ममता का भंडार है बेटियाँ, वही काली, दुर्गा का रूप है बेटियाँ।
हर क्षेत्र में कंधे से कंधा मिलाकर चलने लगी है बेटियाँ
लड़कों को पीछे छोड़ संवरने लगी है बेटियाँ
अपमान मत करना कभी बेटियों दोस्तों,
आसमान की ऊँचाई को भी छूने लगी है बेटियाँ।
लेकिन आज भी कई जगह पीछे छूट गई है बेटियाँ
हैवानों की आग में झूझ रही है बेटियाँ
रावण भी इनमें कई बेहतर था दोस्तों,
पर अत्याचारों के प्रकोष में आज भी डूब रही है बेटियाँ।
मर्द भी कहते है कि अकेली बेटी महफूज नहीं है यहाँ
जिसका कारण भी केवल मर्द ही है यहाँ
कल तेरी, आज मेरी कब तक जिन्दा जलती रहेंगी बेटियाँ,
कब तक यूंही गंगा में डूब खुद को पवित्र करती रहेगी बेटियाँ।
सुनसान सड़क पर कब तक नहीं पाएगी बेटियाँ
छोटे कपड़े पहन कब तक जला नहीं पाएगी बेटियाँ
इन दरिंदों को जब तक जला नहीं पाएगी बेटियाँ,
जीवन में कभी मुस्कुरा नहीं पाएगी बेटियाँ।

प्रियंका
बी.कॉम. प्रथम वर्ष
रोल नं0 - 3011

–: कोशिश कर :–

कोशिश कर, हल निकलेगा।
आज नहीं तो, कल निकलेगा ॥

अर्जुन–सा लक्ष्य रख, निशाना लगा।
मरूस्थल से भी फिर, जल निकलेगा ॥

मेहनत कर, पौधों को पानी दे।
बंजर में भी फिर, फल निकलेगाा ॥

ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे।
फौलाद का भी, बल निकलेगा ॥

सीने में उम्मीदों को जिंदा रख।
समन्दर से भी गंगाजल निकलेगा ॥

कोशिशें जारी रख, कुछ कर गुजरने की।
जो कुछ थमा–थमा है, चल निकलेगा ॥

कोशिश कर, हल निकलेगा।
आज नहीं तो, कल निकलेगा ॥

पूनम
बी.ए. तृतीय वर्ष
रोल नं0 – 0001

वृक्षों का महत्व

आओ मिलकर पेड़ लगाँए, हरा–भरा ये देश बनाँए।
वातावरण को स्वच्छ बनाकर, इस जीवन को स्वस्थ बनाँए।
पेड़ ना कोई कटने पाए, जंगल अब ना छटने पाए।
मिलकर हम सब कसम ये खाँए, आओ मिलकर पेड़ लगाँए।
पेड़ है देते प्राण वायु, जीवन हमसे हो दीर्घायु।
खुद समझें, औरों को बताँए, आओ मिलकर पेड़ लगाँए ॥

अंजु
बी.ए. तृतीय वर्ष
रोल नं0 – 0192

–: जीवन की यात्रा :–

पूछा जो मैंने एक दिन खुदा से
अंदर मेरे ये कैसा शोर है,
हंसा मुझ पर फिर बोला
चाहतें तेरी कुछ और थी
पर तेरा रास्ता कुछ और है
रूह को संभालना था तुझे
पर सूरत संवारने पर तेरा जोर है
खुला आसमान चाँद तारे चाहतें हैं तेरी
पर बन्द दीवारों को सजाने पर तेरा जोर है।

कृष्णा कुमारी
बी.ए. प्रथम वर्ष
रोल नं0 – 2003

–: हिन्दी भाषा पर कविता :–

पढ़ा था विद्यालय में विषय गणित और विज्ञान,
पर कभी न दिया मैंने हिन्दी पर ध्यान।
हिन्दी है मेरी सबसे बड़ी पहचान,
उसके बिना सब पूछते क्या है तेरा मान?
हिन्दी को दिलाना है विश्व में सम्मान,
कभी न देख सकूंगी हिन्दी का अपमान।
हिन्दी को हमें दिलाना है उसकी खोई हुई पद,
हिन्दी के सम्मान से बड़ा नहीं किसी का कद।
हिन्दी को हमने माना अपनी राष्ट्रभाषा,
विश्व में बोली जाए यह है हमारी आशा।
आज समय ऐसा है सबको भाता अंग्रेजी,
पर हिन्दी की मिठास को सब समझते पहेली।
हिन्दी हमारी आशा है हिन्दी हमारी भाषा है,
हिन्दी की उन्नति हो यही हमारी अभिलाषा है।
क्यों समझते हैं सब अंग्रेजी बोलने को महान,
भूल गए हम क्यों अंग्रेजी ने बनाया था हमें वर्षो पहले गुलाम।
सारी भाषाएँ लेती हिन्दी का सहारा,
जय हिन्द जय भारत यह नारा हमारा।
आज उसी भाषा को हम क्यों करते प्रणाम,
क्यों? केवल 14 सितम्बर को ही होता हिन्दी का सम्मान।
॥ जागो भारतीयों कहाँ गया हमारा स्वाभिमान ॥

प्रीति
बी.ए. द्वितीय वर्ष
रोल नं0 – 2132

–: राष्ट्रभाषा हिन्दी पर कविता :–

जन-जन की भाषा है हिन्दी, भारत की आशा है हिन्दी
जिसने पूरे देश को जोड़े रखा है, वो मज़बूत धागा है हिन्दी
हिन्दुस्तान की गौरवगाथा है हिन्दी, एकता की अनुपम परम्परा है हिन्दी
जिसके बिना हिन्द थम जाए, ऐसी जीवनरेखा है हिन्दी
जिसने काल को जीत लिया है, ऐसी कालजयी भाषा है हिन्दी
सरल शब्दों में कहा जाए तो, जीवन की परिभाषा है हिन्दी...
हिन्दी हमारी आन है हिन्दी हमारी शान है, हिन्दी हमारी चेतना वाणी का शुभ वरदान है,
हिन्दी हमारी वर्तनी हिन्दी हमारा व्याकरण, हिन्दी हमारी संस्कृति हिन्दी हमारा आचरण,
हिन्दी हमारी वेदना हिन्दी हमारा गान है, हिन्दी हमारी आत्मा है भावना का साज़ है,
हिन्दी हमारी देश की हर तोतली आवाज़ है, हिन्दी हमारी अस्मिता हिन्दी हमारा मान है।
हिन्दी निराला, प्रेमचंद की लेखनी का गान है, हिन्दी में बच्चन, पंत, दिनकर का मधुर संगीत है,
हिन्दी में तुलसी, सूर, मीरा जायसी की तान हैं।
जब तक गगन में चाँद, सूरज की लगी बिंदी रहे, तब तक वतन की राष्ट्रभाषा ये अमर हिन्दी रहे,
हिन्दी हमारा शब्द, स्वर व्यंजन अमिट पहचान हैं, हिन्दी हमारी चेतना वाणी का शुभ वरदान हैं।
भारत के हृदय का भाव हो तुम, हिंदुस्तां की आवाज हो तुम।
तुमसे ही सभी हुए साक्षर, इस राष्ट्र का आधार हो तुम।
मनोभाव साकार हुए तुमसे, साहित्य रचे इतिहास लिखा,
अस्तित्व बिना तेरे हैं कहाँ? जिसने तेरा सम्मान किया,
प्रेमचंद, द्विवेदी, प्रसाद, पंत, महादेवी, निराला और है अनंत,
सबको कहा किसने समर्थ किया।
विस्मृत कर तुमको जो भी गए, वो क्या विकसित हो पायेंगे,
जड़ से कटकर भी वृक्ष कभी, क्या हरे-भरे रह पाए हैं।
उठो जागो संकल्प करो, विकसित करके निज भाषा को,
भारत की शान बढ़ायेंगे, हिन्दी भाषी कहलायेंगे
हिन्दी भाषी कहलायेंगे।
हिन्दी को हमने माना अपनी राष्ट्रभाषा, विश्व में बोली जाए यह है हमारी आशा।
आज समय ऐसा है सबको भाता अंग्रेजी, पर हिन्दी की मिठास को सब समझते पहेली।
आज उसी भाषा को हम क्यों करते प्रणाम,
क्यों? केवल 14 सितम्बर को ही होता हिन्दी का सम्मान।

सोनू
बी.कॉम. प्रथम वर्ष
रोल नं0 - 3008

–: बेटी बचाओ बेटी पढाओ :–

कुछ कहना चाहती हूँ, माँ मैं भी जीना चाहती हूँ।
दुनिया के रंग, दुनिया के संग, मैं भी जीना चाहती हूँ॥
माँ तेरा खून तो पाया मैंने, फिर दूध क्यूँ न पी पाई।
अस्तित्व मेरा मिटने पर भी, तू आँसू तक बहा न पाई॥
दुर्दशा देखकर मेरी तो ब्रह्मा भी पछताया होगा,
संग मुझे ले जाते हुए यमराज भी थर्राया होगा॥
जन्म लेने दे माँ मुझे भी, बेटे से बढ़कर दिखलाऊंगी।
धरा का सुख क्या चीज है, तोड़ आसमान का तारे लाऊंगी॥
अंतिम सन्देश यही है मेरा बचालो जीवन अजन्मी बिटिया का,
अस्तित्व वरना मिट जाएगा इस दुनिया से मानव का॥

अल्का यादव
बी.ए. द्वितीय वर्ष
रोल नं0 - 2020

–: हिन्दी भाषा का महत्व :–

हिन्दी भाषा देश की मिट्टी की खुशबू सी महकती है,
देश प्रेम की भावना इससे और ज्यादा निखरती है,
शब्द-शब्द में इसके जैसे एक सम्मान झलकता है,
वीर सपूतों की वाणी में इससे जोश उगलता है,
वीर रस, श्रृंगार रस सारे रसों की ताकत है,
चाहे भाषा जो भी बोलो हमें इसी की आदत है,
हम भारत के लाल सदा इसको अपनाते आए हैं,
बचपन से ही हमें राष्ट्र के लिए सिखाते आए है,
वर्णमाला को सिखा है हमने बचपन के खेलों में,
कैसे भूले इसके दिन हम दुनिया के झमेलों में,
ये संस्कृती बनी हुई है ये आधार जरूरी है,
इसमें अवरोध न बने इसमें प्रयास जरूरी है,
भारत माता के माथे की बिंदी है,
राष्ट्रवाद के लिए जरूरी हिंदी है...

प्रियंका
बी.ए. द्वितीय वर्ष
रोल नं0 - 2022

–: समय का सदुपयोग :–

करो समय का सदुपयोग,
ना करो तुम इसका दुरूपयोग।
समय होता है बड़ा बलवान,
भिखारी को भी बना देता है भगवान।
समय के साथ चलोगे तो मंजिल पाओगे,
समय का दुरूपयोग करोगे तो ठोकरे खाओगे।
समय के साथ हमेशा चलना,
देगा समय तुम्हारा साथ।
समय को न व्यर्थ गंवाना,
मंजिल मिलेगी अपने आप॥
पता न चला था किसी को कह कर गए कबीर तब,
पल में प्रलय होयेगी बहुरि करेगा कब।
पता होते हुए भी समय को व्यर्थ गंवाते है,
जब निकल जाता है समय तब केवल पछताते है।
समय से ना पीछे रहना,
हमेशा चलना समय के साथ,
फिर देखना भाग्य भी,
नहीं छोड़ेगा तुम्हारा साथ॥
''समय की रक्षा, भविष्य की सुरक्षा''

हिमांशी
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष (NM)
रोल नं0 – 5002

–: मैं :–

मैं लिख रही हूँ, तो जी रही हूँ
गिरती चलती हूँ, फिर भी संभल रही हूँ
चलो चुपके चुपके नंगे पाँव कुछ ऐसा करते है
खुद को पाने की चाहत में, बस भटक रही हूँ

कुछ बड़े सपनों को लेकर शायद मैं उड़ रही हूँ
पंख फैला नहीं पा रही
घाव भरे पैरों से बस चल रही हूँ
इधर-उधर की हर बात सुनकर भी मैं
अपने सपनों के लिए मैं लड़ रही हूँ
नाम बनाना है खुद का, तभी संघर्ष कर रही हूँ

SLOGAN

शक्तिशाली बन नारी
नहीं रहोगी बेचारी

शिक्षा को अपनाएगें
नारी सशक्त बनाएगें

जब नारी शिक्षा पाएगी
तो दुनिया में छा जाएगी

जब महिला आगे आएगी
इन्द्रा-रजिया-फूले बन जाएगी

महिमा
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष (Med.)
रोल नं0 – 0011

–: आनन्द :–

काम बोझ लगता है, जब इंसान उससे खुद को जोड़कर, आनंद अनुभूति नहीं करता । एक प्याऊ पर सेवा करती वृद्धा ने समझाया । नीतू की पोस्ट ऑफिस में नियुक्ति हुई थी। सुबह नौ बजे से शाम साढ़े पांच बजे तक ड्यूटी थी। इतना लंबा समय उसे बहुत भारी लगता । नीतू हमेशा मस्त रहने वाली लड़की थी। अचानक उसकी नौकरी पोस्ट ऑफिस में लगी। नौकरी के लिए उसे दूसरे शहर जाना पड़ा। उसे सुबह 8 बजे घर से निकलना पड़ा। ऑफिस में उसकी नजरें घड़ी पर टिकी रहती। उसको इतना लंबा समय उतकाहट से भर देता। उसने मोबाइल पर अपने पापा से कहा– शायद ये नौकरी मैं नहीं कर पाऊंगी। पापाजी ने कहा देखलो बिटिया सैन्ट्रल गवर्मेंट की नौकरी है। तुम्हारे लिए अच्छी है । आज उसने पोस्ट ऑफिस के सामने देखा कि एक वृद्धा प्याऊ घर के सामने बैठी थी। पोस्ट ऑफिस के प्यून ने बताया कि यह वृद्धा इस प्याऊ पर सुबह आठ बजे से रात आठ बजे तक बैठती थी। वह नि:शुल्क काम करती है। यह सुनकर नीतू को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने सोचा कि यह वृद्धा बिना किसी स्वार्थ के खुशी–खुशी अपना कार्य कर रही है, जबकि उसे अपने कार्य के लिए अच्छा खासा पैसा मिलने पर भी वह उतकाहट महसूस करती है। नीतू की बोटल में पानी नहीं था। इसलिए वह बोटल लेकर प्याऊ की ओर चल पड़ी। उसे बोटल लेकर आया हुआ देखकर माता जी जल्दी से खड़ी हो गई और उसकी बोटल में घड़े का ठंडा पानी भरने लग गई। उसने उस वृद्धा से कहा– माताजी आप कितने घंटे ड्यूटी करती हो? माताजी ने हंसकर कहा–ड्यूटी नहीं बेटा सेवा । खुशी–खुशी अपना काम करने से बड़ा सुख मिलता है। नीतू अपनी उतकाहट पर शर्मिंदा थी।

रिंकी
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष (Med.)
रोल नं0 – 0015

"Success Is Not A Number Game"

आजकल विद्यार्थीयों के लिए सफलता का सीधा मतलब है कि वो अपने पेपर में कितने नंबर या कितने प्रतिशत लाए है। 74 प्रतिशत मानसिक तनाव का कारण हमारा शिक्षा तंत्र है जो विद्यार्थीयों की प्रतिभा को नजरअंदाज कर नंबरों को ज्यादा महत्व देता है। कहा जाता है कि आज–कल जितना तनाव विद्यार्थी लेते है उतना सन् 2000 में मानसिक रोगी को होता था। इस मानसिक तनाव की वजह से न केवल प्रतिभाशाली विद्यार्थी आत्महत्या की ओर अग्रसर हो रहे हैं अपितु वे किसी भी क्षेत्र में अपना 100 प्रतिशत नहीं दे पाते।

मैं खुद एक अध्यापक हूँ और मुझे भी ये सब समझ आता है। हमारी भी कोशिश रहती है कि हम अपने विद्यार्थीयों की मदद करे, उनका मनोबल बढ़ाए। बस मेरा मानना है कि –

The one who ask, fool for 5 min but who don't, fool for a life time.

विद्यार्थीयों को बस अपने विषयों आधारित संदेहो को दूर करने के लिए प्रयास करना चाहिए क्योंकि आपकी बुद्धिमता का मूल्यांकन आपके नंबर से नहीं बल्कि आपकी कार्य करने की क्षमता से होगा । हर विद्यार्थी को सीखने पर अपना ध्यान केंद्रित करना चाहिए। गुरू की महिमा का गुणगान व्यक्त नहीं किया जा सकता। गुरू ही अपने हर विद्यार्थी को अपने से ज्यादा कामयाब बनाना चाहता है। मेरे शब्दों से मैं ना तो विद्यार्थी ना ही किसी गुरू की विशेषताओं का महिमामंडन कर सकता हूँ पर इतना बता सकता हूँ कि बिन गुरू के दुनिया विरान है।

Sunil Kumar
Ext. Lecturer in Zoology

–: निराशा में आशा :–

एक समय की बात है, रोबर्ट नाम का एक वैज्ञानिक था। वह काफी लंबे समय से किसी प्रयोग को पूरा करने में लगा हुआ था। वह इस कोशिश में दिन-रात एक कर चुका था। लगभगा पाँच साल के कठिन परिश्रम के बाद भी उसे सफलता नहीं मिल पा रही थी। एक रात जब वैज्ञानिक अपने घर में सोया हुआ था तब अचानक उसकी प्रयोगशाला में आग लग गई। बाहर से लोगों की चीखें सुनकर उसकी नींद टूट गई। जब उसने बाहर जाकर देखा तो चारों ओर आग की लपटें फैल चुकी थी। उसकी प्रयोगशाला पूरी तरह राख हाने वाली थी। वह यह सब होते भी चुपचाप देखे जा रहा था। तब वहाँ भीड़ से एक आदमी बाहर आया और उसने वैज्ञानिक को खरी-खोटी सुनाई। उसने कहा, ''अरे कैसे आदमी हो जो चुपचाप खड़े होकर सब देख रहे हो।'' तब वैज्ञानिक ने जवाब दिया, ''यह सब जो जल रहा है, इसमें ऐसा कुछ नहीं है जिससे कुछ पाया जा सकता हो। यह सब मेरी असफलता और निराशा के चिह्न हैं। अच्छा ही है जो सब जल गया, कल से एक नई शुरूआत करूँगा।'' वैज्ञानिक का जवाब सुनकर लोग चकित भी थे और खुश भी। कल की सुबह एक नया सवेरा लाने वाली थी।

इसलिए जिन्दगी में जब भी लगे कि सबकुछ खत्म हो गया है तब निराशा को छोड़कर आशा का दामन पकड़िए, एक सकारात्मक सोच अपने मन में लाइए। एक नई, अच्छी और बेहतर शुरूआत कीजिए। आप जरूर सफल होंगे।

पूजा
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष (N.M.)
रोल नं0 - 5013

–: उड़ान :–

उसने कहा धीरे चलो, कौन तुम्हारा हाथ पकड़ता है,
मंजिल पहुँच कर क्या करोगी, कौन तुम्हें देख गर्व से भरता है।
लड़की हो जमीन पर रहो, आसमान की ऊँचाईयों पे हक बस लड़कों का है,
और ज्यादा पंख मत फैला, काट दिये तो कौन तुम्हारे लिये रोता है।
सब सोच-समझ परखकर, फिर जवाब देने आई हूँ,
मुझे जरूरत नहीं किसी के साथ की, मैं खुद चलना जानती हूँ।
अपने पापा को देखकर, मैं गर्वित होना जानती हूँ,
क्या कहा लड़की हूँ तो, तुम जैसो से लड़ना जानती हूँ।
और मेरे पंख तब काटना, जब उतनी औकात तुम्हारे अंदर हो,
मैं तुम जैसो को आसमान से जमीन पर लाना जानती हूँ।
लड़की हूँ तो क्या, मैं खुद को लड़कों से बेहतर मानती हूँ,
अपने हक की लड़ाई को मैं खुद लड़ना जानती हूँ,
हाँ मैं लड़की हूँ, और खुद को लड़की ही मैं मानती हूँ॥

प्रिया
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष (Med.)
रोल नं0 - 0001

–: पर्यावरण :–

पर्यावरण शब्द का निर्माण दो शब्दों 'परि' और 'आवरण' से मिलकर बना है। जिसमें 'परि' का मतलब है हमारे आसपास अर्थात् जो हमारे चारों ओर है और 'आवरण' जो हमें चारो ओर से घेरे हुए है। पर्यावरण उन सभी भौतिक, रासायनिक एवं जैविक कारकों की कुल इकाई है जो किसी जीवधारी अथवा पारितंत्रीय आबादी को प्रभावित करते हैं तथा उनके रूप, जीवन और जीविता को तय करते हैं। संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित यह दिवस पर्यावरण के प्रति वैश्विक स्तर पर राजनैतिक और सामाजिक जागृति लाने के लिए मनाया जाता है। इसकी शुरूआत में 5 जून से 16 जून तक संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा आयोजित विश्व पर्यावरण सम्मेलन से हुई। 5 जून 1973 को पहला विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। पर्यावरण के जैविक संघटकों में सूक्ष्म जीवाणु से लेकर कीड़े-मकोड़े, सभी जीव-जंतु और पेड़-पौधों के अलावा उनसे जुड़ी सारी जीव क्रियांए और प्रक्रियांए भी शामिल है जबकि पर्यावरण के अजैविक संघटको में निर्जीव तत्व और उनसे जुड़ी प्रक्रियांए आती है। जैसे - पर्वत, चट्टाने, नदी, हवा और जलवायु के तल इत्यादि। सामान्य अर्थो में यह हमारे जीवन को प्रभावित करने वाले सभी जैविक और अजैविक तत्वों, तथ्यों, प्रक्रियाओं और घटनाओं से मिलकर बनी इकाई है। यह हमारे चारों ओर व्याप्त है और हमारे जीवन की प्रत्येक घटना इसी पर निर्भर करती और संपादित होती है। मनुष्यों द्वारा की जाने वाली समस्त क्रियांए पर्यावरण को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। इस प्रकार किसी जीव और पर्यावरण के बीच का संबंध भी होता है, जो कि अन्योज्याश्रित है। मानव हस्तक्षेप के आधार पर पर्यावरण को दो भागों में बांटा जाता है। जिसमें पहला है-प्राकृतिक या नैसर्गिक पर्यावरण और मानव निर्मित पर्यावरण। यह विभाजन प्राकृतिक प्रक्रियाओं और दशाओं में मानव हस्तक्षेप की मात्रा की अधिकता और न्यूनता के अनुसार है। पर्यावरणीय समस्यांए जैसे प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, इत्यादि मनुष्य को अपनी जीवनशैली के बारे में पुनर्विचार के लिए प्रेरित कर रही है और अब पर्यावरण संरक्षण और पर्यावरण प्रबंधन की आवश्यकता महत्वपूर्ण है। आज हमें सबसे ज्यादा जरूरत है पर्यावरण संकट के मुद्दे पर आम जनता और सुधी पाठक को जागरूक करने की।

पूजा
बी.कॉम. प्रथम वर्ष
रोल नं0 - 3010

"DURGA"

2021-2022

ENGLISH SECTION

Sh. Pradeep Yadav
Editor

Sushila
B.A. IInd Year
Roll No. - 2212
Student Editor

B.C.G.C.W. Nangal Choudhary

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता 2021-2022

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता 2021-2022

एन.एस.एस. के अंतर्गत गतिविधियाँ

महिला प्रकोष्ठ के अंतर्गत गतिविधियाँ

EDITORIAL

Dear students, being the English Editor I want to share my views with you which will prove helpful for you in your life and career. Work is life. We should perform our duties honestly in our life. Activeness is very important in our life. Laziness is the root cause of many problems in the life.

-The first is that you should always work hard and give your best.

-It doesn't matter what you are doing in life, if you always give your best, you will get much better results than if you do not.

-Giving 100% in everything you do ALWAYS leads you to greater things in life.

-The workers who go above and beyond in this world are almost always remembered with better positions or pay rises.

-Those who train harder, study harder and give more of themselves will always get more out of their life than those who take it easy, that's just common sense.

So, give your best, give everything you have to get you best possible result, if it does not work out at least you will have the pride & knowing you gave it you best shot. At worst you will have also learned as much as work out at least you will have the pride of knowing you gave it your best shot. At worst you will have learned as much as you can along the way, and those who are committed to learn more in life will almost always be the same people who earn more and become more.

--Second thing I have to say is - You're Young, far too young to stress out. Leave that crap for later in life, when you have kids and bills to pay. For now, just do your best, work hard and see what happens.

--Your path will reveal itself in time. When you really know what you want to do with your life, when you find something you must do, that is when you must look in and say THIS IS IT that is when you tell yourself I AM ALL IN.

--One failed test doesn't mean jack in the real world.

--Do you know how many successful people failed test in school?

Every one of them.

It's normal. But guess what? Those successful people didn't give up and THAT IS THE KEY. They kept working on becoming BETTER THEMSELVES. BETTER in everything they do.

--When you get out on the field of life, no one wants the guy who passed every test, they want the guy who was willing to fight for his dream, the one who had the character to fight back after failing - that guy is much more valuable is the real world that someone with book knowledge.

--So work on yourself.

Work on your education, yes, but work on yourself just as much.

--Build some mental strength - it's much more important than passing a test. You can not win in life, if you are losing in your mind.

If your mind is strong, than your LIFE will be strong.

Dr. Pradeep Kumar Yadav
Editor

College Life

College life is one of the most remarkable and lovable times of an individual's life. Unlike school life, college life has a different experience and a person needs to have this experience in his/her life. Lucky are those who get the chance to enjoy their college life. College life provide us new experiences which we always dreams of experiencing after our school. As many people don't get this chance due to their circumstances or financial issues. For every person, college life has a different meaning. While some people spend their college life partying with their friends, other become more caution about their careers and study hard. Whatever the way, every individuals enjoy their college life and always wish to re-enjoy that time once it is over.

College Life Experiences :- How is it different from school life. Both school life and college life is the most memorable time of a person's life. But both of them are quite different from each other. While in school life, we learn everything in a protected environment, college life exposes us to a new environment where we have to learn new environment and face new challenge by ourselves. We spend half of our young life living in that environment. But college life is for three year only. Where every year introduces new challenge and every lesson to us. In college life we form a relationship with our mentor and they don't protect us all the time as our school teacher did. Unlike school like, we don't have many limitation in college life, and it is up to us how we want to spend our college life. In college life we see new faces and experience a unique environment in which we have to mingle ourselves. We make new friends there who stay with us for the rest of our lives. Also we get a chance to shape our careers by asking the right decision and studying hard. College life is not only about the study but also about the overall development of an individual through various activities and challenges. In college life, one gets a chance to make their own decision. In school life student get an opportunity to be class monitors. In college life an individual gets a chance to nominate himself/herself for more new things.

Sushila
B.A. IInd Year
Student Editor

Don't Waste Your Time On Silly Things

There was a girl. She was very intelligent and smart. At the age of 15 she used to solve any kind of Physics examination questions. After realising her talent randomly her father thought, she may apply for IIT. At that time, IIT exam seems to be very difficult. When she reached the examination centre for giving the exam. She attempt first question successfully. When she reached at the 2nd question. She tried to solve the question but she failed. And she take complete 3 hours to solve that 2nd question but she couldn't solve. When she comes out, her father asked about the exam 'How's the exam? Then she replied, I was stucked at the 2nd question. She didn't attempted the remaining paper. When result declared, they find out there was a equational mistake in 2nd question. All students will get bonus point for that question.

After one year, when she again attempt IIT exam, she got 1st rank. Moral of the story :- Second chance always win. Sometimes a second chance give us a new aspect of life.

Mahima
B.Sc. IIIrd (Med.
Roll No. - 0011

Wild Roses Will Bloom

Tender though wild, I saw them conflicting for a room,
bees ever sucking their might, to them, a fair shake.
Though I know, one day, wild roses will bloom.
Brutes razing their roots up, bring in doom,
now, shatter the petals by this ruthless intake.
Will these wild roses get a chance to groom?
Oh! see, what they conceal in the stem is gloom,
renouncing glamour, to hide from the stake.
Though I know, one day, wild roses will bloom.
Their breasts have vigor to invert the foredoom,
with tiny roots, can bring in the quake,
so quietly, one can listen to its surpassing zoom.
Seem so sober but with compressed boom,
be Argus - eyed, it's hidden under the flake.
Though I know, one day, wild roses will bloom.
They can set up prevalence, come off the sheet of toom,
it'll take fixation, fire in the soul to rewake
state of affairs, to scintillate in the anteroom.
Though I know, one day, wild roses will bloom.

Sakshi Singh
B.Sc. IIIrd Year (N.M.)
Roll No. - 20003

Isabella Tiger Moth

She, Isabella tiger moth, how fragile,
though strives to scope its wingspan
Never ask if she's American on Asian,
see the story, it's all same in the file.
You're so right saying, she's so docile,
oh, that's you who lie in cimmerian,
and feeding iniquity, of your vile Satan.
Who gave you power to set her profile?
She's fertile is your expectancy, oh mighty.
White witch moth, emblem of death and faith,
irreverence to call her death, she's not.
It's her oblation to start fresh for equality
She's not futile nor hostile, think in-depth.
Moth's seeking the light of truth, to kill the blot.

Faith

He would walk again, I know
he would and how am I supposed
to allow otherwise. I bring him
pain, I being him & my ruthlessness
but I know, he would never
let me down. No matter how many
times I fall and how deep I'm
drown, he would catch me and
rise along with me and that's
why I rely on him even when
some moments I trust him the
least. But oh lord, I know he is
holding onto me te is what makes
me keep moving He's the faith
I'm talking about my only strength.

Sakshi Singh
B.Sc. IIIrd Year (N.M.)
Roll No. - 20003

Evaluation

I looked in her eyes, asked crazy questions.
which she had to look back to answer them.
My mother, she's lived a hundred lives, in my
eyes, she told me stories I never heard about
and things I never knew about. No, she didn't
have cell phone like today's lads but she had
what we still lack of, a carefree, life with no
worries for a better future, no jealousy for her
fellows who dressed well, ate healthy, and had
flawless skin. She had friends to rely on
her creepy days while our circle ends at
the next person. Hah! She might have lived
without electricity a better education,
in her old days, but she's far too smart to
sharpen her kittens in today's ruthless world
of pain and suffering, fear and hopelessness.
She's antique, you're modern, but remember,
she also had many rights awaken when
grandpa didn't return home from his ordeal,
dreamed of awful things and passed nights
in terror. That's what it is, we're humans, we
might develop but we'll never control our
emotions and why should we, it's what
makes us humans, a creative art of our Lord.

Sakshi Singh
B.Sc 3rd Year (NM)
Roll No. 0003

Political Misinformation

High quality information is critical for the functioning of democracy. And here we are in an era of growing prominence of social media and a variety of news media, it's become increasingly difficult for citizens to judge the quality of the information they encounter in their daily lives. But not only this, social and digital media have been found to amplify and accelerate the diffusion of misinformation, providing tools for propaganda at an unprecedented scale. To understand the mechanics of political misinformation and its connections with public opinion formation, there is a huge challenge for democracy. Evidence of widespread political ignorance among voters is a long-standing finding in public opinion studies. And not surprisingly, misinformation is also a threat to democracy as it can lead citizens to confidently defend factually incorrect beliefs. Hence, the political misinformation leads to two intertwined issues. First, misinformation among voters may lead to improper judgements of candidates and issues. Second, fake news has become a powerful tool of propaganda in the hands of opportunistic actors. These two issues generate concerns amid the difficulty of fact checking organisations to tackle the large volume of fake news.

Saksham
B.Com Final Year
Roll No. 0001

Beti Bachao Beti Padhao

Beti Bachao Beti Padhao is a government campaign. This scheme was launched by the Prime Minister Mr. Narendra Modi on 22nd of January in 2015 at Panipat, Haryana on Thursday. The purpose of launching this scheme was generating awareness as well as improving the efficiency of welfare, Service women and girl child in the Indian society. This campaign has been launched by keeping in mind to prevent sex determination, female feticide, save girl child, as well as provide quality education to them. Women are very important part of our society. But the raising crimes against woman has resulted in a regular decreasing sex ratio of females in India. It has become very crucial to save the girl child to maintain the male-female sex ratio and also the balance of nature because males and females are meant to co-exist in nature. Many initiative are taken by Indian government and NGOs to protect and save the girl child. It is a tri-ministerial effort of Ministries of women and child development health and family welfare human resource development. After birth of a girl child, she has to face another type of discrimination in terms of education, health, nutrition, safety, rights and other needs of the girl child. We can say that women were dis-empowered instead of being empowered. In order to empowering women and given them their full rights from their birth government of India has launched this campaign. Beti Bachao Beti Padhao scheme is the way to achieve Positive change in the negative mindset of society for girls.

Pooja
B.A. 1st Year
Roll No. 2153

Unforgettable School Life

Some of our mistakes are not acceptable
Moments spend in the school are unforgettable.
When teacher got late for the class
We all were found outside the class
Like a lion has a habit of roaring
Some periods in the school were boring
In the school, teachers were restless
Time spend with each other is priceless
Some friends were interested in fighting
Waiting for the bell to rang was very exciting
In the life, we are facing many fears
Thanks to school for giving us beautiful years.

Poem

Dandelion seeds in the air
Fear is almost everywhere
Some stuck in there homes, crying
While some staring out
in the window, sighing
"Gosh isn't nature amazing!
With many exotic birds flying"
Some you thought had died,
Some more chirping all day and night
With the sky, air, water
So pure and clean,
Blooming flowers of white,
yellow and carmine
Some bloom out like a piece of heaven,
amazing and tiny.
While some amazingly wonderful, big,
from 2 cm to 3 and much more greenery.
With less of a chaos and clear view of every tree
The sky is so much clear.
I can even see God up there.
The earth day was celebrated at it's best
Indeed, the nature is having a good rest.

Your Best

If you always try your best
Then you'll never have to wonder
About what you could have done
If you'd summoned all your thunder.
And if your best, Was not as good
As you hoped it would be,
You still could say, I gave today
All that I had in me.

Sweety Jangir
B.Sc. 2nd (Medical)

EDUCATION

Education is light, When it is concentrated it's glows so bright.
Better to understand it for few time, This will view, the images of your cine.
No need to wake up all night, If you will not cram it like tide white
It is rightly known caution, We must not be proudly while taking ken of education.
No need to study if you don't have an interest, Education is like a key,
Which can open all ways of yet.

Vijay Laxmi
B.Sc. 2nd (N.M.)
Roll No. 5037

A Parent's Love

No gift on earth is greater,
no treasure held above.
The joy that comes from knowing,
a parent's endless love
In spite of how it's tested,
It grows from year to year.
Providing strength and comfort,
It always draws us near.
It warms and it protects us,
and guides us from afar.
Shedding light upon us,
Like a bright and shining star.
And when all things are measured,
not one shall rise above.
Or be compared in value,
To a Parent's endless love.

Chanchal Sharma
B.Sc. 2nd Yr. (N.M.)
Roll No. 5008

School Days

Growing up in this day and age,
With free expression all the rage.
Our young ones learn when starting
school that reading's fun and maths is
cool while writing's not the least bit
going it really is so much like drawing
for every child it is essential
to realise their full potential
and teachers always do their best
When years of school days end at last
with all examinations passed
And say, "Our school days we will miss"
and as the final day arrives
"They were the best days of our lives"

Anju Kumari
B.Sc. 2nd Yr. (Medical)
Roll No.

YOUR BEST

If you always try your best
Then you'll never have to wonder
About what you could have done
If you had summoned all your thunder.
And if your best
Was not as good
As you hoped it would be,
You still could say,
"I gave today
All that I had in me."

Priya
B.Sc. 2nd Yr. (Medical)
Roll No. 0001

Struggle Of A Women

Its not easy from her birth
She didn't know, that's why?
Why, they are they not feeling shy

She has started her journey of struggle
Don't know what's about to happen
But it's the fight of her against every struggle
Its not only to express her pain with paper and pen

Its fight for her life
Its fight for her dreams
She is not going to waste her life
Its time to achieve her aims

She listened these people many time
Its time to listen her self
She did according to this society at every time
Its time to do for herself

She is not weak
People made her
Its time to work
Why? They force her.

Saksham
B.Com. 3rd Yr.
Roll No. 0001

"A Girl Child is God's Gift"

Girls are treasure to one's family,
Girls give moral strength to the family.
Girls are the future of every nation,
Girls needs a little amount of care,
a hand full of warmth,
a heart full of love;
education to girls,
will left the family.
Let the girls also be
smiling and happy.

Kanchan
B.Sc. 2nd Yr. (N.M.)
Roll No. 5023

Life and Success

Life is a long race
With many difficulties to face
And to fight for our rights
We take help of both
Wrong and right
Where there is a will, there is a way
So we should always
be willful and gay
We should just do our duties
and not wait for fruits
keep these words in mind
And then only Success you will find.

Teachers

Teachers are like God
Who make our life good
They are wonderful persons,
who drive away all our tensions.

From them we learn how to respect others
and we will also learn good habits
They give us light,
and make our future bright.

They are the shining stars
With fragnance as sweet as flowers
These teachers are wonderful people
Who are source of knowledge.

We pray for them once
On whom God's grace may
always fall.

Sushma
B.Com. 2nd Yr.
Roll No. 0012

"Me and My Narnaul"

Oh! The wonderful beauty of Jal Mahal attracts me,
The Hills of Dhosi puzzles me,
The land of great National leaders are proud to me,
The music of Narnaul wonders me,
The people of Narnaul love with affection,
More than 3 Lakh of Population
Living without any confusion.
Very huge variety of agriculture and culture
This is the gift of nature
The history of Narnaul made its inscription
Many Civilizations have its evolution,
Everyone lives happily here
Without the thief instilling fear
So come one and come all,
Have fun and make your life beautiful.

"What is Life"

Life is a chapter, learn it.
Life is a boat, sail it.
Life is a plain paper, write it.
Life is a journey, travel it.
Life is a dream, fulfil it.
Life is a problem, solve it.
Life is a love, feel it.
Life is a challenge, meet it.
Life is a game, play it.

Sushma
B.Com. 2nd Yr.
Roll No. 0012

Freedom for Girl Child

"Sleeping is the only time to feel real freedom as there's no rule in dreaming." Is it the freedom to choose what girls want to do in life? Is it the freedom to be able to walk in the streets without being catcalled or harassed? Is it the freedom to choose their own partner or not get married at all? Is it the freedom to speak up, loud and clear and not be afraid of naysayer telling them that women should be "docile and gentle"? For freedom, does not mean celebrating independence achieved from the Britishers. It means so much more for a country and its women, as we move forward. Why are men considered superior to women? It's all in our brains. We have been taught that women are not capable of doing certain things, men are able to.

Being a girl for me, freedom means to be at peace with myself and not feel guilty or shameful of certain things just because they do not fit into societal norms. This includes freedom to study, a career option later in life and change into another when needed. Freedom to live freely on my own terms after I turn 18, and freedom to learn new things. More importantly, I would love to have the freedom to walk on the streets without the fear of being catcalled or harassed, freedom to have an opinion on certain issues, freedom where I am not judged by my looks, freedom to live and struggle on my own terms and not for the sake of survival. My mom always tells me to not wear short clothes whenever I step out of my house, but my question is why? I personally feel that if there is a man who wants to rape a woman because she is wearing a bikini. The problem is not the bikini but in the mind of that man.

Secondly, it doesn't matter what a woman or anyone else for that matter is wearing. A psychotic person will rape, kill or aimed someone regardless of what they are wearing because his intentions are evil. Not because the jeans were a little too tight or the shirt a little too tight or revealing. For instance, I don't understand this correlation of a girl wearing short clothes with getting raped.

Nikita
B.Sc. 2nd Yr. (N.M.)
Roll No. 5005

Work is Worship

Work is Worship, Says the days that have leaped;
As we sowed, So we have reaped.
We have reaped love, From this lovely land;
Ploughed it with perseverance, Holding each other's hand
New ideas, new ways, We have acquired with zeal;
New technique, new though In this ordeal.

Kavita Kumari
B.Sc. IInd Year (N.M.)
Roll No. - 5026

महाविद्यालय की रजिस्ट्रार समिति के सदस्य

महाविद्यालय की सांस्कृतिक समिति के सदस्य

महाविद्यालय की महिला प्रकोष्ठ समिति के सदस्य

महाविद्यालय के अनमोल रत्न (शैक्षणिक सत्र 2020–21)

B.Sc (Medical)

B.Sc (Non-Medical)

B.A. (Arts)

B.Com

उत्कृष्ट प्रदर्शन (सांस्कृतिक गतिविधियाँ)

Deepika
B.A. II Year (Arts)
College Roll no. 120086002166

Priyanka
B.A. II Year (Arts)
College Roll no. 120086002166

Sushila
B.A. II Year (Arts)
College Roll no. 120086002212

Priti
B.A. 2nd (Arts)
College Roll no :- 120086002132

Manika
BA 2nd (Arts)
College Roll no : 3054920112

Khushbu
B.A. 3rd (Arts)
College Roll no. 3054920128

Ruhi
B.Com Ist
College Roll no. 21108600303

Rakhi
B.Sc IIIrd (N.M.)
Roll No. 3086420008

Ranu
B.Sc IInd (N.M.)
Roll No. 120086015033

Anju Kumari
B.Sc IInd (Med.)
Roll No. 120086030034

स्व. श्री बैजनाथ चौधरी जी की पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में एस.पी. श्री चन्द्र मोहन एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति

राष्ट्रीय एकता दिवस पर शपथ लेते हुए प्राध्यापकगण एवं छात्राएँ

महाविद्यालय में पौधा-रोपण

योग दिवस की झलकियाँ

स्वतंत्रता दिवस समारोह

''दुर्गा''

2021-2022

विज्ञान विभाग

श्रीमती सन्तोष यादव
सम्पादिका

रवीना
बी.एस.सी द्वितीय वर्ष (N.M.)
रोल नं०- 2212
छात्र सम्पादिका

बैजनाथ चौधरी राजकीय महिला महाविद्यालय
नांगल चौधरी

EDITORIAL

Dear Children,

I would like to congratulate you on publication of first magazine of our college. This is a platform where you can exhibit your creations. I hope you be more interested in giving your imaginations in form of articles for coming edition of magazine.

At this occasion, I would like to tell you about "What you can do to make healthy society. Dear children, Education is great leveller which allow you to cross boundaries from poor to rich, from underprivileged to privileged group, caste barrier, gender discrimination etc. You should put your maximum effort in completing education. You should have updated knowledge in every field of life. You should try to become financially independent.

You are surviving in hopeful environment where you are allowed to take education & jobs. You have to take full advantage of this & should become role model in society. At the same time, you have to work on many social issues like dowry system, gender sensitization, crime against woman etc. For this you have to nurture your male child in such a way that he treats man & woman equally. Both male & female should be treated equally and should be provided with healthy environment so that they can develop healthy society & give their contribution to the development of nation.

With lots of Love & Blessings.

Mrs. Santosh Yadav
Editor

"Biofertilizer and their Significance"

Soil is the source of natural medium for plants. Organic/Inorganic substances present in the available and non-available nutrients to make available to the plants by micro-organisms like Fungi, Bacteria and actinomycetes etc. Fungi in the form of mycorrhiza (some special class of fungi form) symbiotic association with fine root of plants. Similarly some special group of bacteria and actinomycetes form symbiotic and nonsymbiotic association with plant root and present in the rhizospheric soil.

Abundance of biopolymers like proteins, fats, fibers and carbohydrates in natural soils. Microbes in soil digest these large biopolymers to respective smaller monomers. Proteins are digested to amino acids to amonia and nitrate. Carbohydrate and fiber to sugar to carbon, hydrogen and oxygen and fats/lipids to fatty acid. Plants can easily absorb these small molecules or monomers. Additionally the soil microorganism help the plant-roots to absorb macro and micro nutrients present in the soil. The soil bacteria also release biochemicals which accelerate the plant growth.

Biofertilizers are harmless and eco-friendly low cost agro-input supplementary to chemical fertilizers. It improve soil structure and water holding capacity. It also increase soil fertility, fertilizer use efficiency and ultimate by increase the field by 15-20% in general.

Dr. Akhilesh Kumar
Associate Professor
Botany

"Future of Electric Vehicles in India"

India is the fifth largest car market in the world and has the potential to become one of the top three in the near future. With about 40 crore customers in need of mobility solutions by the year 2030.

However, keeping in mind the goals set under the Paris agreement, the increasing number of automobile customers shall not imply an increase in the consumption of conventional fuels.

To ensure a positive growth rate towards achieving India's Net Zero Emissions by 2070, a transportation revolution is required in India which will lead to better "Walkability", Public transportation, Railways, Roads and Better Cars. Many of these better cars are likely to be electric.

Lately, there is a growing consensus among automotive professionals and the public alike that the future of vehicles is electric. However, in this regard, India still has a lot to cover in terms of battery manufacturing establishing charging infrastructure etc.

Origin and Increasing Scope : The push for Electric Vehicles is driven by the global climate agenda established under the Paris agreement to reduce carbon emissions in order to limit global warming.

The global electric mobility revolution is today defined by the rapid growth in electric vehicle uptake.

About two in every hundred cars sold today are powered by electricity with EV sales for the year 2020 reaching 2.1 million.

Falling battery costs and rising performance efficiencies are also fueling the demand for EVs globally.

Need for Electric Vehicles : India is need of a transportation revolution. The transition to electric mobility is a promising global strategy for decarbonising the transport sector.

India's support to EVs : India is among a handful of countries that support the global EV30@30 campaign, which aims for at least 30% new vehicle sales to be electric by 2030.

India's advocacy of five elements for climate change - "Panchamrit" - at the COP26 in Glasgow is a commitment to the same.

The government of India has taken various measures to develop and promote the EV ecosystem in the country such as :

The remodelled faster adoption and manufacturing of Electric Vehicles (FAME II) Scheme

Production-Linked Incentive (PLI) Scheme for Advanced Chemistry Cell (ACC) for the supplier side.

The recently launched PLI scheme for Auto and Automotive Components for manufacturers of Electric Vehicles.

Associated Challanges :-

Battery Manufacturing : It is estimated that by 2020-30 India's Cumulative demand for batteries would be approximately 900-1100 GWh. However there is concern over the absence of a manufacturing base for batteries in India, leading to sole reliance on imports to meet rising demand. As per government data, India imported more than $1 billion worth of lithium-ion cells in 2021, even though there is negligible penetration of electric vehicles and battery storage in the power sector.

Consumer related issues: In 2018, India was reported to have only 650 charging stations, which is quite less than the neighbouring counterparts who already had over 5 million charging stations.

Lack of charging stations make in unsuitable for the consumers in covering long range.

Moreover, it takes up to 12 hours for a full charge of a vehicle at the owner's home using a private lighty-duty slow charger.

Also, the cost of a basic electric car is much higher than the average price of a car running on conventional fuel.

Way Forward:-

Electric Vehicle as way forward : EVs will contribute to improving the overall energy security situation as the country imports over 80% of its overall crude oil requirements.

The push for EVs is also expected to play an important role in the local EV manufacturing industry for job creation.

Opportunities for Battery Manufacturing and Storage : With recent technology disruptions battery storage has great opportunity in promoting sustainable development in the country. Considering government initiatives to promote-e-mobility and renewable power (450 GW energy capacity target by 2030)

Increasing R&D in EVs : The Indian market needs encouragement for indigenous technologies that are suited for India from both strategic and economic standpoint.

Dr. Sudesh
Extension Lecturer
Dept. of Physics

CHEMISTRY

The Glorious truths of Chemistry,
If they are read aright,
Will ever wake in you and me
Sweet sources of delight.

It tells of what the rocks are made,
The earth, the sea, the air,
The jewels in earth's surface laid,
How floods are formed, and clouds collected.

And winds and tempests blow,
The earth's gay surface so ....
And how the tints are formed that deck
And all the treasures there ....

How in the air the meteors start,
And muttering thunders roll,
And how the forked lightnings dart,
And flash from pole to pole.

And O! how many a lovely sight
The eye is made to see,
That reads the merry tales aright,
Of charming Chemistry.

Ravina
B.Sc. IInd (N.M.)
Roll No. - 0043
Student Editor

सड़क सुरक्षा

सड़क सुरक्षा जीवन के लिये होती है,
सड़को पर अकसर दुर्घटना होती है।
जीवन को हमसे जो छीने पल-भर में,
वह दुर्घटना बड़ी भयंकर होती है॥

वृक्ष रोपण

जब एक तिहाई भारत होगा हरा,
प्रदूषण मुक्त होगी भारत की धरा,
तब ही वृक्ष रोपण का कार्य होगा खरा॥

"गरीबी"

अगर गिरी है अर्थव्यवस्था तो गरीब क्या करें,
इस बढ़ती महंगाई के आगे अब गरीब, क्या मरे??

"शिक्षा"

शिक्षा का धन है सबसे न्यारा,
कभी न होता इसका बँटवारा॥

"स्वच्छता"

युवा शक्ति है सब पर भारी,
चलो करो अब स्वच्छ भारत की तैयारी॥

बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ

बेटी बिना नहीं सजता घरौंदा (घर)
बेटी ही है संस्कारों का परिंदा
अगर दोगे उसे भी खुला आसमान
तो बेटी भी बढ़ायेगी परिवार का नाम।

पर्यावरण

प्रकृति में शामिल वो सब है,
जिनके बिना जीवन दुर्लभ है।

प्रदुषण

आओ मिलकर कसम ये खाये,
प्रदूषण को हम दूर भगाये।

" मतदान "

कर्तव्यों से कोई न रूठे,
किसी का वोट कभी न छूटे ॥

" बेरोजगारी "

देखा नहीं शहर देखी नहीं रात,
करने को पूरा अपना एक ख्वाब।
पढ़-लिखा के कर ली हासिल डिग्रियां हज़ार,
मगर आज क्यों है देश का युवा बेरोजगार ॥

" मेरा भारत महान "

अनेकता में एकता, ही हमारी शान है।
इसीलिए, मेरा भारत महान है ॥

दीपिका
बी.ए. द्वितीय वर्ष
रोल नं० - 2166

Slogan Writing

''हरी-भरी हो धरती अपनी, संकल्प यही हमारा है।
हरियाली को चारों तरफ, मिलकर यूँ फैलाना है ॥''

''स्वर्ग से सुंदर धरा हमारी, चारों तरफ फैली हरियाली।
रक्षा करनी है हमें जिसकी, मातृभूमि है जान से प्यारी ॥''

''संकल्प यही है हमको लेना, पेड़ तो एक लगाना है।
पेड़ों से ही जीवन हमारा, सबको ये बतलाना है ॥''

''पेड़ है तो हम है, सबको ये सिखलाना है।
इनको कटने से बचाकर ही तो, अपना जीवन बचाना है ॥''

एक पेड़ कहता है हमसे -''मैंने ही तो साँसे दी है,
दी हरियाली भरी धरा। फिर भी तुम मुझको काटे हो,
क्यू ? दी है ऐसी सजा ॥''

Ravisha
B.A. IInd Year
Roll No. - 2013

Slogan Writing

Plant a tree, Plant a tree
So that Next Generation
Can get air for free.

If you Cut a tree, You kill a life.
If you Save a tree, You Save a life.
If you Plant a tree, You Plant a life.

Planting a tree is much better than
Wearing a Mask
to be safe from pollution.

Trees bring Greenery and,
Greenery bring Happiness

Trees give good look,
don't destroy them
from Earth look.

-: जल संरक्षण :-

मानवता के लिए प्रकृति का सबसे कीमती उपहार पानी है। पानी को जीवन भी कहा जा सकता है क्योंकि इस धरती पर जीवन की कल्पना पानी के बिना कभी नहीं की जा सकती है। पृथ्वी को ''नीला ग्रह'' कहा जाता है क्योंकि यह ब्रह्मांड का एकमात्र ज्ञात गृह है जहाँ पर्याप्त मात्रा में प्रयोग के योग्य पानी मौजूद है। पृथ्वी के सतह के स्तर का लगभग 71 प्रतिशत पानी है। इस पृथ्वी का अधिकांश पानी समुद्रों और महासागरों में पाया जाता है। नमक की अत्यधिक उपस्थिति के कारण उन पानी का उपयोग नहीं किया जा सकता है। पृथ्वी पर पीने योग्य पानी का प्रतिशत बहुत कम है। इस पृथ्वी के कुछ हिस्सों में लोगों को शुद्ध पीने योग्य पानी इक्कट्ठा करने के लिए लंबी दूरी तय करनी पड़ती है। लेकिन इस धरती के अन्य हिस्सों में लोग पानी के मूल्य को नहीं समझते हैं। इस ग्रह पर पानी की बर्बादी एवं ज्वलंत मुद्दा बन गया है। पानी की एक बड़ी मात्रा मनुष्य द्वारा नियमित रूप से बर्बाद की जाती है। हमें इस खतरे से बचने के लिए पानी की बर्बादी को रोकने की जरूरत है। पानी को बर्बाद होने से बचाने के लिए लोगों में जागरूकता फैलाई जानी चाहिए। इस धरती पर भगवान की ओर से हमारे लिए सबसे कीमती उपहार है पानी। हमारे पास पृथ्वी पर पानी की प्रचुरता है लेकिन पृथ्वी पर पीने के पानी का प्रतिशत बहुत कम है। उन पानी का केवल 0.3 प्रतिशत उपयोग करने योग्य है। इस प्रकार पृथ्वी पर पानी को बचाने की आवश्यकता है। ऑक्सीजन के अलावा, पृथ्वी पर प्रयोग करने योग्य पानी की मौजूदगी से जीवन का अस्तित्व होता है। इसलिए पानी को 'जीवन' के रूम में भी जाना जाता है।

आँचल
बी.कॉम. प्रथम वर्ष
रोल नं0 - 3009

-: Nano Science :-

Nanoscience is an emerging area of science which involves the study of materials on an ultra small scale and the novel properties that these materials demonstrate.

Nanoscience has the potential to reshape the world around us. It could leads to revolutionary breakthrough in fields ranging from manufacturing to health care.

The nanoscale is the dimensional range of approximately 1 to 100 nanometres.

But what does this really mean?

"Nanomaterials" encompass all nanoscale materials or materials that contain at least one nanoscale structure, either on their surface or internally. They can be inorganic, organic or biological. A few example of current nanotechnology include the following:-

Food Security :-

Nanosensors in packaging can detect salmonella and other contaminants in food.

Medicine :-

Some of the most exciting breakthroughs in nanotechnology are occuring in the medical field, allowing medicine to become more personalised, cheaper, safer and easier to deliver.

Energy :-

Nanotechnology is being used in a range of energy areas to improve the efficiency and cost-effectiveness of solar panels, create new kinds of batteries, improve the efficiency of fuel production using better catalysis and create better lighting systems.

Conclusion :-

Further research is needed in these area. There is a great interest in Nano-science since it will provide innovative applications and advanced technology

for many different industries. We can say the "Nanoscience is the science of the future."

Smt. Pinki
Extension Lecturer
Dept. of Chemistry

Scientist :- Panchanan Maheshwari Biography

Born in November 1904 in Jaipur (Rajasthan) Panchanan Maheshwari rose to become one of the most distinguished botanists not only of India but of the entire world. He moved to Allahabad for higher education where he obtained his B.Sc. During his college days, he was inspired by Dr. W. Dudgeon an American missionary teacher, to develop interest in botany and especially morphology.

His teacher once expressed that if his student progresses ahead of him it will give him a great satisfaction. These words encouraged Panchanan to enquire what he could do for his teacher to return.

He worked on embryological aspects and popularised the use of embryological characters in taxonomy. He established the Department of Botany, University of Delhi as an important centre of research in embryology and tissue culture. He also emphasised the need for initiation of work on artificial culture of immature embryos. These days, tissue culture has been a landmark in science. His work on test tube fertilisation and intra-ovarian pollination won worldwide acclaim.

He was honoured with fellowship of Royal Society of London (FRS), Indian National Science Academy and Several other institutions of excellence. He encouraged general education and made a significant contribution to school education by his leadership in bringing out the very first textbooks of Biology for higher education schools published by NCERT in 1964.

Panchanan work on test tube fertilisation and intra-ovarian pollination. He described fertilisation further. In test tube fertilisation occur on nutrient media by fusion of ova and sperm. He described formation of an embryo is an artificial culture.

Tissue culture given by him play a great role now in many important and valuable product formation in industries. Tissue culturing give a important portion of our environment society. He worked on embryological aspects and popularised its characters.

Test-tube fertilisation invention has allowed the creation of new hybrid plants that could not previously be crossbred naturally.

Death of Panchanan - 18 May 1966, Delhi.

Award - Fellow of Royal Society (1965)

Education - E wing Christian College

Field - Botany

In class Panchanan Maheshwari was like his guru Dedgeon. His students both loved and feared him. In his honour they named many newly discovered species of plants, like Panchanania Jaipuriensis and Isoetes Panchananii. Though renowed as an embryologist, he was well versed in other botanical fields. Maheshwari wrote well versed in other two authoritative books, An Introduction to the Embryology of Angiosperms and Recent Advances in Embryology of Angiosperms. He also wrote books for schools to improve the standard of teaching life sciences. In 1951, he founded the International Society of Plant Morphologist. He was editing its journal Phytomorphology.

Rinki
B.Sc. Ist Year (Med.)
Roll No. - 0015

Know Our Scientists - Aristotle- Greek Philosopher

Founder of Zoology

Aristotle, greek aristotles, (born 384 BCE, Stagira Chalcidice, Greece - died 322, Chalcis, Euboea) ancient Greek philosopher and scientist, one of the greatest intellectual figures of Western History. He was the author of a philosophical and scientific system that became the framework and vehicle for both Christian Scholasticism and Medieval Islamic Philosophy. Even after the intellectual revolutions of the Renaissance, the Reformation, and the Enlightment Aristotelian concepts remained embedded in Western thinking.

Born : 384 BCE. ancient greece. Greece

Died : 322 BCE. Chalcis. Greece

Founder : Lyceum

Notable works : "Categories" . "Eudemian Ethics"."History of animals"

Subjects of Study : Biology. Golden Mean. Ethesis. Hylomorphism. Aristotle's intellectual range was vast, covering most of the sciences and many of the arts including biology, botany, chemistry, ethics, history, logic, metaphysics, rhetoric, philosophy of mind, philosophy of science, physics, political theory, psychology and Zoology. He was the founder of formal logic, divising for it a finished system that for centuries was regarded as the sum of Zoology, both observational & theoretical, in which some of his work remained unsurpassed until the 19th century.

Life : The Academy

Aristotle was born on the Chalcidic peninsula of Macedonia, in northern Greece. His father, Nichomachus, was the physician of Amyntas III (reigned C.393 - C. 370 BCE). After his father's death in 367. Aristotle migrated to Athens, where he joined the Academy of Plato (C.428 - C.348 BCE). He remained there for 20 years as Plato's pupil & collegue.

Aristotle did for History :

He invented the field of formal logic, and identified various scientific disciplines and explored their relationships to each other.

Aristotle's most famous work :

1. Nichomachean Ethics 2. Politics 3. Metaphysics 4. Politics 5. On the Soul (De Anima)

Aristotle's contribution of Education :

He believed that education was central - the fulfilled person was an educated person. Third, he looked to both education through reason and education through habit. By the latter he meant learning by doing - 'Anything that we have to learn to do we learn by the actual doing of it.'

Sweety
B.Sc. IInd (Med.)
Roll No. - 21

Know our Scientists -
Role of James Watson in Genetics

James Dewey Watson (born April 6, 1928) is an American Molecular biologist, geneticist and zoologist. In 1953, he coauthored with Francis Crick the academic paper propsing the double helix structure of the DNA molecule. Watson, crick and Maurice Wilkins were awarded the 1962 Nobel Prize in Physiology or Medicine "For their discoveries concerning the molecular structure of nucleic acids and its significance for information transfer in living material." In subsequent years, it has been recognised that Watson and his colleague Rosalind Franklin for her contributions to the discovery of the double helix structure. Watson earned degrees at the University of Chicago (BS, 1947) and Indiana University (PhD, 1950). Following a post-doctoral year at the University of Copenhagen with Human Kalckar and Ole Macloe, Watson worked at the University of Cambridge's Cavendish Laboratory in England, where he first met his future collaborator Francis Crick. From 1956 to 1976, Watson was on the faculty of the Harvard University Biology department, promoting research in molecular biology. - Watson has written many Science books, including many textbooks 'molecular biology of gene (1965) and his bestselling book The double Helix (1968). Between 1988 & 1992, Watson was associated with the National Institutes of Health, helping to establish the Human Genome Project, which completed the task of mapping the human genome in 2003.

Sanju
B.Sc. IInd (Med.)
Roll No. - 32

SCIENCE
by Martin Dejnicki

Everything works, because of science.
Even your old, kitchen appliance.
What about your mom's car?
Without science, it wouldn't go far.
With science we could make, a computer or phone,
If you want a twin, just ask for a clone.
Science will explain, nature and trees,
It's also used, to find cures for disease.
Science is cool, the evidence is clear,
It's so much fun, enjoy it my dear.

Yukta
B.Sc. IInd (N.M.)
Roll No. - 0021

Periodic Table A to Z

A is for Aluminium, so shiny and white

B is for Boron, sometimes black as the night

C is for Calcium (good for you health)

D is for Dubnium (you wouldn't have it on your shelf)

E is for Einstienium, my favourite element of all

F is for Francium hardly any found on earth at all

G is for Gold, expensive and rare

H is for Hydrogen, it is the first element there

I is of Iodine (used for cleaning your cuts)

J is for nothing, absolutely no buts

K is for Krypton, doesn't really hurt Superman

L is for Lead, church rooves are a fan

M is for Magnesium, making metals light

N is for Nitrogen in the air day and night

O is for Osmium, it's rarer than Gold

P is for Phosphorus, use it to light up the fire when it's cold

Q is for Quartz, made of Oxygen and Silicon

R is for Ruthenium, sometimes used in toggle switches to turn stuff off and on

S is for Silver, sometimes used in microchips

T is for Tin, stops the rust on grips

U is for Uranium, radioactive and green

V is for Vanadium, don't cut yourself on it or you'll scream

W is Tungsten's sign

X is for Xenon, its density is five point nine

Y is for Yttrium you can find it in cabbage

Z is for Zinc "baahhh Zinc is average"!

Ritu
B.Sc. IInd (N.M.)
Roll No.- 0036

Fun facts about the **HUMAN BODY**

You can make a three inches long nail, using all the iron in your body.

You can light up a-bulb using the electricity your brain generates when you are awake.

It only takes seven seconds for food to reach your stomach.

When you are born, you have 300 bones, but as an adult you only have 206. Some bones fuse to become a single bone as you grow.

Your body produces enough heat in half an hour to boil nearly 2 litres (or half a gallon) of water.

Your bones are stronger than steel.

Your eyes can identify 10 million colours and your nose can remember 50,000 scents.

If your eye was a digicam, it would have 576 megapixels.

Your eye's cornea is the only part of your body with no blood supply. It gets its oxygen directly from the air.

If your saliva can't mix with food, you can't taste it.

How many atoms does your body contain? Seven octillion atoms

Lalita
B.Sc. IInd (N.M.)
Roll No.- 0012

Three main stages in the treatment of water.

1) Sedimentation or Settlement :- Sedimentation is a common way of treating water. It is the process that removes solids that float and settle in the water. The process relies on the use of sedimentation tanks that remove larger solids.

2) Filtration :- Using filtration in water treatment, solid particles are entirely removed from water.

3) Chlorination :- Chlorine gas is bubbled through the water to kill bacteria and other microorganisms.

Vijay Laxmi
B.Sc. IInd Year (N.M.)
Roll No. - 0037

HEALTH TIPS

- Base your diet on plenty of foods rich in carbohydrates.
- Reduce salt and sugar in take.

- Maintain a healthy body weight.
- Enjoy plenty of fruits and vegetables.

- Eat a variety of foods.
- Drink plenty of fluids.

- Eat regular control the portion size.
- Start now! And keep changing gradually.

Ekta
B.Sc. IInd year (N.M.)
Roll No. - 0011

Imoportance of Chemistry

COMMUNITY

HEALTH

ENVIRONMENT

MEDICINE

INDUSTRY

SCIENCES

TEACHING

RESEARCH

YOU

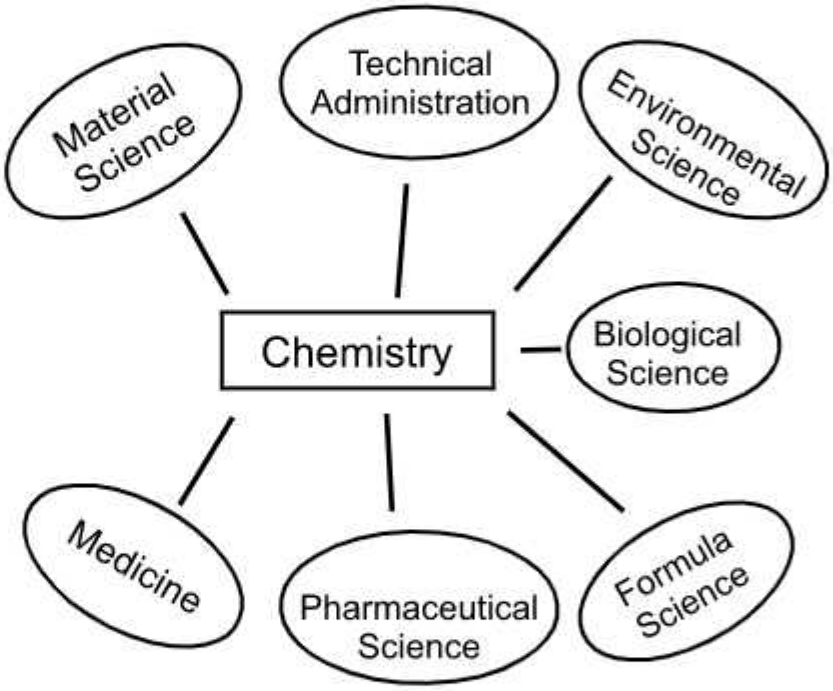

Anisha
B.Sc. Ist Year (Med.)
Roll No. - 0021

Concept of Multiverse

As a child, you might have always thought that you are not alone, looked in the vast sky and wondered what if, a lot of what ifs. Well multiverse or rather say theories of multiverse, would give wings to these thoughts. Multiverse theory suggests that our universe, with all its hundreds of billions of galaxies and almost countless stars spanning tens of billions of light-years, may not be the only one. Instead, there may be an entirely different universe, distantly separated from our-and another, and another. Hugh Everett is the person behind the concept of multiverse. In 1954, he came up with the idea that quantum effects cause the universe to constantly split. If the many-worlds view is right, our actions shape our counterparts lives in parallel worlds. The concept of multiverse arises in a few areas of physics but the most prominent example comes from something called inflation theory. Inflation theory describes a hypothetical event that occurred when our universe was very young - less than a second old. The multiverse is a hypothetical group of multiple universe. Together, these universe comprise everything that exists : the entirely of space, time, matter, energy, information, and the physical laws and constants that describe them. The different universe within the multiverse are called 'parallel universe, 'other universes', 'alternate universe', or 'many worlds'. The physics community has debated the various multiverse theories over time. In 2007, Nobel laureate, Steven Weinberg suggested that if the multiverse existed, the hope of finding a rational explanation for the precise valves of quark masses and other constants of the standard model that we observe in our Big Bang is doomed, for their valves would be an accident of the particular part of the multiverse in which we live.' But we have no practical proof on multiverse. And just like concept of time travel, multiverse is also a theory which physics debate over. But we can't deny, that this concept is mindblowing and a topic of great interest.

Pooja
B.Sc. Ist (N.M.)
Roll No. - 5009

Mars Colonization

Since the beginning of space technology, our neighbouring planet, Mars, has been a lesser or more interested topic. Multiple missions have been conducted to study for any existing life or the lives which existed once, a study of soil which helps in understanding many prospects and the study of its atmosphere. And recently, for a few decades, Mars colonization has been a hot topic. Meanwhile, the CEO of Space X and Tesla Motors, Elon Musk, has shown a great interest in the topic. He says that Mars Colonization is one of his greatest missions. It were easier, it had been done already, but colonizing a planet comes with hardships and difficulties. As for Mars, air pressure on Mars is very low i.e. at 600 Pascals, it's only about 0.6 percent that of Earth. In that atmosphere, you might be exposed to the vacuum of space, resulting in a severe form of the bends - including ruptured lungs, dangerously swollen skin and body tissues. Besides air pressure, there's high radiation, low gravity and other environmental pressures and if Mars is colonized, life would be somewhat difficult rather than on Earth. People would have to live in heavily - shilelded settlements in low-elevation areas or take shelter in underground lava tubes. No matter the solution, settlers on Mars will be dealing with a higher level of radiation than what we experience on Earth. And then, the question arises, why do we need to colonize other planet when we have the "best suitable for life" planet available, Earth? Well, we can't say it's necessary but it would be a clever step to do so. We've already played to be honest, we are still experiencing. And yet there can be dangerous consequences for the actions we take, the whole species could be turned to dust. And there are other factors too, you know how dinosaurs extincted, suppose a very large asteroid is coming towards Earth and when it strikes the Earth, there would be nothing left known as life, then Mars colonization is a back-up plan. But still, there is no better planet compared to Earth. We should protect our environment because honestly, sometimes, back-up plans fail too. Other than Mars, Venus has also been a topic of discussion on the same concept. So, hereby, I put my opinion, if we have that technology or expecting to develop the one, Mars colonization would be a non-regreatable clever step to take.

Vinita
B.Sc. Ist (N.M.)
Roll No.- 5040

International Space Station

International Space Station is a modular space station in low Earth orbit. It is a multinational collaborative project involving five participating space agencies : NASA, Roscosmos, JAXA, ESA and CSA. The ownership and use of the space station is established by intergovernment treaties and agreements. Its orbit height is 408 kms and the speed on the orbit is 7.66 km/s and it is the largest single structure humans ever put into space. Its main construction was completed between 1998 and 2011, although the station continually evolves to include new missions and experiments. The nations, the ISS consists of are Canada, Japan, the Russian Federation, the United States and eleven Member States of the European Space Agency (Belgium, Denmark, France, Germany, Italy, The Netherlands, Norway, Spain, Sweden, Switzerland and the United Kingdom) The mission of the Interpation Space Station is to enable long-term exploration of space and provide benefits to people on Earth. At ISS, scientists, researchers and astronauts have learned a tremendous amount about what is takes to create efficient technologies, test critical systems and have driver advances on how to protect the human body - all of which are critical for deep space missions and our eventual journey to Mars. The station has now hosted over 2400 experiments conducted by over 230 visitors from 18 countries. The anti-gravity environment of space makes the station an ideal laboratory for studying everything that relates to long-term impacts on biological elements. The ISS is also a central hub that spearheads advancements in physical medicine. On Earth, researchers were able to discover that certain bacteria like Salmonella can become more pathogenic during spacelight. Research on the space station led to new studies and developments for microbial vaccines. Like these, there are several other fields where the ISS is helping in improving human lives.

Sangam Kumari
B.Sc. IIIrd (N.M.)
Roll No. - 0005

-: MATHEMATICS :-

Archimedes is known as the father of Mathematics. Mathematics is the science that deals with the logic of shape, quantity and arrangement. Math is all around us, in everything we do. It is the building block for everything in our daily lives, including mobile devices, art, money, engineering and even sports.

Newton invented/discovered calculus in about the same amount of time the average student learns it. 2013 was the first year since 1432 that's rearrangement of four consecutive numbers.

Mulitplying 21978 by 4 reverses the order of the number : 87912

The word 'Hundred' derives from 'Hundra' in old norse, which originally meants 120.

The largest Prime number ever found is more than 22 million digits long.

Almost 50% of adults in England can't do basic Maths.

There are 177,147 ways to tie a tie, according to Mathematics.

2520 is the smallest number that can be exactly divided by all the numbers 1 to 10.

Dr. Sushma Yadav
Extension Lecturer
Dept. of Mathematics

–: पृथ्वी का उष्मा बजट :–

पृथ्वी सूर्य से जितनी उष्मा प्राप्त करती है, उतनी उष्मा का वह त्याग भी कर देती है। इसलिए पृथ्वी पर औसत तापमान सदा एक जैसा बना रहता है। पृथ्वी द्धारा प्राप्त सूर्यातप और उस द्धारा छोडे जाने वाले ''भौतिक विकिरण'' के खाते को पृथ्वी का उष्मा बजट कहा जाता है।

मान लिजिए वायुमण्डल की सबसे ऊपरी सतह पर प्राप्त होने वाली उष्मा 100 इकाई है। इसमें से 35 इकाईयाँ धरातल पर पहुँचने से पहले ही अन्तरिक्ष में परावर्तित हो जाती है।

इन 35 इकाईयों में से 6 इकाईयाँ धूलकरणों से प्रकीर्णन द्धारा 27 इकाईयाँ मेघों द्धारा और शेष 2 इकाईयाँ बर्फ से ढ़के क्षेत्रों द्धारा परावर्तित होकर अन्तरिक्ष में लौट जाती है (6+27+2=35) सौर विकिरण की यह परावर्तित मात्रा पृथ्वी की एल्बिडो कहलाती है।

बची हुई उष्मा की 65 इकाईयों में से 14 इकाईयाँ वायुमण्डल द्धारा और 51 इकाईयाँ पृथ्वी द्धारा अवशोषित कर ली जाती है। इस प्रकार सूर्य से प्राप्त उष्मा के छोटे से अंश का भी लगभग आधा भाग ही पृथ्वी पर पहुँच पाता है।

पृथ्वी द्धारा अवशोषित 51 इकाईयाँ पुन: भौमिक विकिरण के रूप में वापिस शून्य में लौट जाती है। इन 51 इकाईयों में से 17 इकाईयाँ सीधे अन्तरिक्ष में चली जाती है और 34 इकाईयाँ वायुमण्डल द्धारा अवशोषित कर ली जाती है। (17+34=51)

इन 34 इकाईयों में से 6 इकाईयाँ स्वयं वायुमण्डल द्धारा व 9 इकाईयाँ सवहंन द्धारा व 19 इकाईयाँ गुप्त उष्मा द्धारा अवशोषित हो जाती है।

इस प्रकार वायुमण्डल 48 इकाईयों का अवशोषण करके उन्हें अन्तरिक्ष में लौटा देता है। पृथ्वी और वायुमण्डल दोनों मिलकर (17+48=65) इकाईयों को अन्तरिक्ष में भेजते हैं। इससे पृथ्वी और वायुमण्डल द्धारा 51+14 इकाईयों का हिसाब बराबर हो जाता है।

इसी को पृथ्वी का उष्मा बजट अथवा उष्मा सन्तुलन कहा जाता है।

Mamta Kumari
Extension Lecturer
Dept. of Geography

Important Algebric Formula :-

$a^2+b^2 = (a+b)^2 - 2ab$

$a^3+b^3 = (a+b)(a^2-ab+b^2)$

$(a+b+c)^2 = a^2+b^2+c^2 + 2ab +2bc + 2ca$

$(a-b-c)^2 = a^2+b^2+c^2 - 2ab + 2bc - 2ca$

$$a^8 - b^8 = (a^4+b^4)(a^2+b^2)(a+b)(a-b)$$

If $a+b+c=0$

then $a^3+b^3+c^3 = 3abc$

$$x^m = a = \log_x a = m$$

$$\log_a x = \frac{\log_e x}{\log_c a}$$

$$(ab)^x = a^x b^x$$

Antim Kumari
B.Sc. IIIrd year (N.M.)
Roll No.- 0022

Important Formulae :-

1. Electric current = $\frac{charge}{time}$ or I = $\frac{q}{t} = \frac{ne}{t}$

2. Ohm's law, R = $\frac{V}{I}$ or V = IR

3. Current in terms of drift velocity (V_d) is I = enAV_d

4. Resistance of a uniform conductor, R = $\rho\frac{l}{A} = \frac{mI}{ne^2\tau A}$

5. Resistance of specific resistance, $\rho = \frac{RA}{I} = \frac{m}{ne^2\tau}$

6. Conductor = $\frac{1}{R}$

7. Conductivity = $\frac{1}{Resistivity}$ or $\sigma = \frac{1}{\rho} = \frac{1}{RA}$

8. Current density = $\frac{Current}{Area}$ or $j = \frac{I}{A} = enV_d$

9. Temperature coefficient of resistance, a = $\frac{R_2 - R_1}{R_1(t_2 - t_1)}$

10. Mobility $\mu = \frac{Vd}{E}$

11. Relation between current density and electric field, E = PJ

12. EMF of a cell, E = $\frac{W}{q}$

Ravina
B.Sc. IIIrd (N.M.)
Roll No.- 0023

Important Formulae :-

Perimeter	Square	$P = 4a$
	Rectangle	$P = 2(l + b)$
Circumference	Circle	$C = 2 \times \pi \times r$
Area	Square	$A = a^2$
	Rectangle	$A = L \times B$
	Triangle	$A = \frac{bh}{2}$
	Trapezoid	$A = \frac{(b_1 + b_2)h}{2}$
	Circle	$A = \pi \times r^2$
Surface Area	Cube	$S = 6a^2$
	Cylinder	$S = 2 \times \pi \times r \times h$
	Cone	$S = \pi \times r \times l$
	Sphere	$S = 4 \times \pi \times r^2$
Volume	Cylinder	$V = bh$
	Cone	$V = \frac{bh}{3}$

Pythagorus Theorem	$a^2 + b^2 = c^2$
Distance Formula	$d = \sqrt{(x_2 - x_1)^2 + (y_2 - y_1)^2}$
Slope of a line	$m = \sqrt{(y_2 - y_1)(x_2 - x_1)}$
Midpoint Formula	$M = \left\{ \frac{(x_1 + x_2)}{2}, \frac{(y_1 + y_2)}{2} \right\}$

Neha Yadav
B.Sc. IInd Year (N.M.)
Roll No. - 5014

Physics : Formulae and Constants Sheet

Forces and Motion

Mean Velocity	$V = \frac{S}{t} = \frac{v+u}{2}$
Equation of Motion	$a = \frac{\Delta v}{\Delta t};\ \ s = ut + \frac{1}{2}at^2;\ \ v^2 = u^2 + 2as;\ \ v = u + at$
Force	$F = ma$
Weight Force	$F = mg$
Momentum	$P = mv$
Change in Momentum (impulse)	$F\Delta t = mv - mu$
Kinetic Energy	$E_K = \frac{1}{2}mv^2$
Gravitational Potential Energy	$E_P = mgh$
Work done	$W = F_S = \Delta E$
Power	$P = \frac{W}{t} = \frac{\Delta E}{t}$
Centripetal acceleration	$a_c = \frac{V^2}{t}$
Centripetal force	$F_c = ma_c = \frac{mv^2}{t}$
Newton's Law of Universal Gravitation	$F = G\frac{m_1 m_2}{r^2}$
Gravitational Field Strength	$g = \frac{GM}{r}$
Moment of Force	$\tau = F \times d$

Ravina Yadav
B.Sc. IInd Year (N.M.)
Roll No. - 5038

दुर्गा का स्वामित्व विवरण

फार्म नं0 4 (नियम 8)

1. प्रकाशन स्थान	–	बैजनाथ चौधरी राजकीय महिला महाविद्यालय, नांगल चौधरी (हरियाणा)
2. प्रकाशन की अवधि	–	वार्षिक
3. प्रकाशक का नाम	–	डॉ0 अनीता तंवर
नागरिकता	–	भारतीय
पता	–	बैजनाथ चौधरी राजकीय महिला महाविद्यालय, नांगल चौधरी (हरियाणा)
4. मुख्य सम्पादक का नाम	–	डॉ0 सुशीला यादव
नागरिकता	–	भारतीय
पता	–	बैजनाथ चौधरी राजकीय महिला महाविद्यालय, नांगल चौधरी (हरियाणा)
5. मुद्रक का नाम	–	दी प्रिंटलाइन प्रैस
नागरिकता	–	भारतीय
पता	–	मौ. शिवाजी नगर, नजदीक–शनि मन्दिर, नारनौल मो. 9466618797
6. स्वामित्व	–	प्राचार्या, बैजनाथ चौधरी राजकीय महिला महाविद्यालय, नांगल चौधरी (हरियाणा)

मैं डॉ0 अनीता तंवर एतद् द्वारा घोषित करती हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार उपर्युक्त विवरण सत्य है।

डॉ0 अनीता तंवर

प्राचार्या एवं संरक्षक

2021–2022

महाविद्यालय का समस्त स्टाफ (टीचिंग)

महाविद्यालय का समस्त स्टाफ (नॉन-टीचिंग)

P. By : The Printline Press, Narnaul M. 9466618797

Best Athelete of the College
Poonam
B.A. III (Arts)
College Roll No. 3054920124

College Colour
Deepika
B.A. II Year (Arts)
College Roll No. 120086002166

Overall College Topper (2020-21)
Nikki
B.Sc. (Medical)

सम्पादक मण्डल

'दुर्गा' (2021–2022)

बैठे हुए – बाएँ से दाएँ – डॉ० प्रदीप यादव (अंग्रेजी विभाग), श्रीमती संतोष यादव (विज्ञान विभाग), डॉ० अनीता तंवर (प्राचार्या), डॉ० सुशीला यादव (मुख्य सम्पादक), डॉ० सुनीता यादव (हिन्दी विभाग)

खड़े हुए – कुमारी रवीना (विज्ञान विभाग), कुमारी सुशीला (अंग्रेजी विभाग), कुमारी दीपिका (हिन्दी विभाग)